वार्षिक रिपोर्ट

ANNUAL REPORT
2006-2007

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT

1 अप्रैल, 2006 से 31 मार्च, 2007 तक

1ST APRIL 2006 TO 31ST MARCH 2007

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक प्रतिवेदन
2006-2007

विषय-सूची

संकल्पना			1
न्यास का निर्माण			3
संगठन			3
सारांश			5
कलानिधि			
कार्यक्रम क	:	संदर्भ पुस्तकालय	7
कार्यक्रम ख	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार	14
	:	साँस्कृतिक सायन्त्रिक संचार	19
कलाकोश			
कार्यक्रम क	:	कलातत्त्वकोश	25
कार्यक्रम ख	:	कलामूलशास्त्र	25
कार्यक्रम ग	:	कलासमालोचन	29
कार्यक्रम घ	:	कलाओं का विश्वकोश	29
कार्यक्रम ङ	:	क्षेत्रीय-अध्ययन	29
जनपद-सम्पदा			
कार्यक्रम क	:	मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह	33
कार्यक्रम ख	:	आदिदृश्य बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ	34
कार्यक्रम ग	:	जीवन-शैली अध्ययन	37
कलादर्शन			
प्रदर्शन			45
कार्यशालाएँ एवं संगोष्ठियाँ			45
सामूहिक चर्चा एवं पुस्तक विमोचन			45
स्मारकीय व्याख्यान			46

सूत्रधार

कार्मिक	49
सेवा एवं आपूर्ति	49
भवन परियोजना समिति	49
दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र बैंगलौर	53

अनुबन्ध

1.	:	इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य (31.03.2007 को)	56
2.	:	केन्द्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्य (31.03.2007 को)	59
3.	:	केन्द्र के अधिकारियों की सूची एवं केन्द्र के वरिष्ठ/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची (31.03.2007 को)	61
4.	:	अप्रैल, 2006 से मार्च, 2007 के दौरान केन्द्र में केन्द्र के प्रकाशन	64

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

ANNUAL REPORT FOR THE PERIOD

1st April 2006 to 31st March 2007

Contents

Concept			67
Formation of the Trust			69
Organisation			70
Summary			72
KALĀNIDHI			74
Programme A	:	Reference Library	74
Programme C	:	Cultural Archives	82
Cultural Informatics Lab			87
KALĀKOŚA			92
Programme A	:	Kalātattvakośa	92
Programme B	:	Kalāmūlaśāstra	92
Programme C	:	Kalāsamālocana	96
Programme D	:	Encylopaedia of Arts	96
Programme E	:	Area Studies	96
JANAPADA SAMPADĀ			100
Programme A	:	Ethnographic Collection	101
Programme B	:	Multi media Presentation	101
Programme C	:	Lifestyle Studies	105
KALĀDARŚANA			110
Performance			113
Workshop			113
Public Lectures/Discussions			114
Memorial Lectures			114

SŪTRADHĀRA 117

Personnel 117
Services and Supply 117
Building Projects Committee 117
IGNCA – Southern Regional Centre 122

ANNEXURES

I : The Indira Gandhi National Centre for the Arts Board of Trustees (as on 31.3.2007) 125

II : The Indira Gandhi National Centre for the Arts Members of the Executive Committee (as on 31.3.2007) 127

III : List of officers of the IGNCA, including Senior /Junior Research Fellows in the IGNCA (as on 31.3.2007) 128

IV : List of the IGNCA Publications during the year 2006-07 131

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक विवरण- 2006-2007

संकल्पना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.के.) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, सामाजिक-संरचना और ब्रह्माण्ड-व्यवस्था के साथ सम्बद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं- लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएँ, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाओं तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है पर भविष्य में इसके क्षेत्र का प्रसार अन्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों तक हो जाएगा । अनुसन्धान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र, कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। अपने समस्त कार्यकलाप में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक एवं अन्तर्विषयक होगा।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

(1) लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

(2) कला,मानविकी, और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसन्धान एवं प्रकाशन का कार्य।

(3) सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन एवं सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय एवं लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार -विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

(6) भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना।

(7) विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक एवं गतिशील तत्त्वों को स्पष्ट करना।

(8) भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना।

(9) कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार-तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करवाने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं और अन्य विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध, विभिन्न क्षेत्रों के मध्य परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण, एवं नागरिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक सम्बन्धों का, एवं इसी प्रकार भारत की लिखित एवं मौखिक धाराओं के मध्य पारस्परिक आदान-प्रदान का अन्वेषण, अभिलेखन और प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ-16-7/86- कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, 24 मार्च,1987 को नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का विधिवत् गठन एवं पंजीकरण किया गया। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के नवम्बर, 2004 के आदेश संख्या ओ०एम०एफ०स०16/26/2004-यू०एस०(अकादमी)के अनुसार 21 सदस्य सेवानिवृत्त हुए तथा 9 नए सदस्य मनोनीत किए गए । आदेश संख्या 16-26/2004 अकादमी (दिनाङ्क 2 फरवरी, 2005) के अनुसार 2 न्यासी और मनोनीत किए गए । आदेश संख्या 16-26/2004यू०एस०अकादमी (दिनाङ्क 5 मई, 2005) के अनुसार 2 न्यासी और मनोनीत किए गए । 31 मार्च, 2007 को कार्यकारी न्यासियों के नामों की सूची अनुबन्ध 1 पर दी गई है।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु केन्द्र, संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु प्रक्रियात्मक रूप से सम्बद्ध, पाँच संभागों के माध्यम से कार्य करता है।

कलानिधि इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान हेतु प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए, बहुविध संग्रहों से युक्त एक सांस्कृतिक-सन्दर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक धरोहर पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक तथा (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार और कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह भी हैं।

कलाकोश यह संभाग आधारभूत अनुसन्धान का कार्य करता है। इसके दीर्घावधिक कार्यक्रमों में, (क) कला की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा मूलभूत तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियाँ, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला, (ग) भारतीय कला-विषयक, समीक्षात्मक साहित्य के पुनर्मुद्रण की शृंखला, (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश, तथा (ङ) क्षेत्र अध्ययन परक कार्यक्रम, सम्मिलित हैं।

जनपद-सम्पदा यह संभाग (क) लोक एवं जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुतियाँ करता है, (ग) भारतीय सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने हेतु

जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन-शैली के अध्ययन की व्यवस्था करता है। इसके साथ-साथ इस संभाग ने (घ) एक बाल रंगशाला स्थापित की है तथा एक (ङ)संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने की भी सोच रहा है।

कलादर्शन यह संभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषयक संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों एवं प्रस्तुतियों के लिए एक मंच उपलब्ध करवाता है। इसके प्रस्तावित भवनों में इन कार्यकलापों के लिए तीन रंगशालाएँ तथा बड़ी-बड़ी दीर्घाएँ होंगी।

साँस्कृतिक सायन्त्रिक संचार 1994 में इस प्रयोगशाला की स्थापना, यू०एन०डी०पी० की सहायता से चलने वाली बहुमाध्यमिक प्रलेखन परियोजना ''स्ट्रेंगथेनिंग'' नेशनल फैसिलिटी फॉर इंटर-एक्टिव मल्टी मीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सेज़ द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के दिशा निर्देश से केन्द्र का दल इंटर-एक्टिव बहुमाध्यमिक प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में सक्षम हुआ । इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की संपूर्ण एवं अन्त:सम्बद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के यथार्थ पुन: सृजन के लिए किया जा रहा है।

सूत्रधार यह संभाग अन्य सभी संभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएँ उपलब्ध करवाता है।

संस्था के शैक्षणिक स्कन्ध अर्थात् कलानिधि एवं कलाकोश अपना ध्यान मुख्यत: बहुविध मूल एवं आनुषंगिक सामग्री के संग्रह पर केन्द्रित करते हैं। ये इसके लिए आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, आकार-आकृति के सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। यह कार्य वे सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) एवं निर्वचन (मार्ग)के स्तर पर इनकी व्याख्या के रूप में करते हैं। जनपद-सम्पदा एवं कलादर्शन, लोक, देश एवं जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्यकलाप तथा जीवन शैली और मौखिक परम्पराओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। कुल मिलाकर, चारों संभागों के कार्यक्रम कलाओं को, जीवन एवं अन्य कलेतर अनुशासनों से उनके सम्बन्ध को, वास्तविक सन्दर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

सभी संभागों की अनुसन्धान, कार्यक्रम-निर्माण एवं फलावाप्ति की प्रविधियाँ समान हैं। वैसे, हर संभाग का कार्य, अन्य संभागों के कार्यक्रमों का पूरक है।

वर्ष 2006-2007 के दौरान इ०गा०रा०क०केन्द्र का विस्तृत ब्यौरा इस प्रकार है।

1 अप्रैल, 2006 से 31 मार्च, 2007 तक की अवधि का वार्षिक प्रतिवेदन

सारांश

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने ने बहुमूल्य स्रोतों को निरन्तर बढ़ाते हुए हंगेरी में जन्मी पर भारत को अपना घर बना लेने वाली माता-पुत्री कलाकारों एलिज़ाबेथ सास एवं एलिजाबेथ ब्रुनर से 852 चित्र अर्जित किए। ये चित्र एलिजाबेथ ब्रुनर द्वारा इ०गा०रा०क०केन्द्र को दान दिए गए थे।

केन्द्र के मीडिया एकक ने अपनी रिकार्डिंग्स के संग्रह से 25 फिल्में डी०वी०डी० पर निकालीं। इनकी बहुत सराहना हुई।

बाबा फरीद, कबीर, नामदेव, त्रिलोचन, रविदास, धन्नाभक्त, पीपाजी, सेन एवं सधना जैसे सन्तों की बाणी में पाए जाने वाले शान्ति, समन्वय, अनुकम्पा, मानवता तथा भाईचारे की परम्परा लिखित एवं गीत-शब्द के रूप में दी गई है । इसकी अनूठी परम्परा के विभिन्न सम्प्रदायों एवं क्षेत्रों तक के फैलाल को समझने के लिए 20 से 21 दिसम्बर, 2006 को *कान्फ्लुएन्स ऑफ ट्रेडिशन्स- भगत बानी इन गुरू साहिब* शीर्षक से एक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

21 से 23 मार्च, 2007 को इस्लाम में प्रचलित धार्मिक परम्पराओं पर विचार-विमर्श के लिए तथा इस्लाम में अपनाई जाने वाली मौखिकता की जटिल प्रकृति तथा इसके विकास और देशी एवं साहित्यिक परम्पराओं विशेषकर स्थानीय क्षेत्रों से घनिष्ठता को समझने के लिए *अक़ीदत के रंग : एक्स्प्रेशन ऑफ डिवोशन इन इस्लाम* शीषर्क से एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

इ०गा०रा०क०केन्द्र ने, भारत सरकार द्वारा आयोजित वार्षिक प्रवासी भारतीय मेले के अवसर पर इण्डियन डायस्पोरा पर एक बड़े अन्तर्राष्ट्रीय समारोह का आयोजन किया । उत्स : द क्रिएटिव ट्रैक ऑफ इण्डियन डायस्पोरा शीर्षक से आयोजित इस समारोह में सारे संसार एवं भारतीय मूल के लेखकों , कलाकारों, फिल्म निर्माताओं एवं विद्वानों ने काफी संख्या में भाग लिया । इसमें मूल की खोज, संगोष्ठियाँ, फिल्म शो, प्रदर्शनियाँ एवं प्रदर्शन तथा जनसमूहों एवं संस्थानों के साथ इंडियन डायस्पोरा पर संवाद शमिल थे ।

साँस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार ने ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, श्रीनगर में डिजिटीकरण का एक प्रमुख भाग पूरा किया । दूसरे चरण में, लगभग नौ लाख पृष्ठों का डिजिटिकरण किया गया । इ०गा०रा०क०केन्द्र के विशेषज्ञों ने इण्डियन कौंसिल फॉर कल्चरल रिलेशन्स की सहायता से नेशनल लाइब्रेरी, मंगोलिया की, उनके अपने बहुमूल्य पाण्डुलिपियों के डिजिटीकरण में सहायता

की तथा केन्द्र ने इलेक्ट्रॉनिक अभिलेखागार को समृद्ध बनाया ।

केन्द्र ने *बाहा* एवं *नोला* के दो जनजाति त्यौहार को मनाया । केन्द्र ने उत्तर -पूर्व को विशेष ध्यान दिया । केन्द्र ने जनजाति समुदायों की उनकी उन्नति के लिए राजधानी में तथा उनके स्थानीय क्षेत्रों में संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया ।

जनपद-सम्पदा प्रभाग के आदि दृश्य कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न प्रान्तों में चल रहे शैलकला परियोजना के अन्तर्गत विस्तृत सर्वेक्षण कार्य किया गया ।

वर्ष 2006-2007 के दौरान इ०गा०रा०क०केन्द्र का विस्तृत ब्यौर इस प्रकार है-

कलानिधि प्रभाग

कलानिधि- एक राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डाटा बैंक के मुख्य घटक हैं-मुद्रित संग्रहों का एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय, माइक्रोफिल्मों/माइक्रोपिशेज का विशाल संग्रह स्लाइडों का एक ठोस संग्रह, सास्कृतिक अभिलेखागार एवं भारत दक्षिण एशिया एवं पश्चिम एशिया के पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य, भाषा एक सुसज्जित श्रव्य/दृश्य एवं फोटो प्रलेखन/कलानिधि का मूल उद्देश्य अन्तर्विभागों जैसे कलाकोश एवं जनपद सम्पदा में सतत् शोध कार्यों के लिए प्रमुख सूचना/ज्ञान के स्त्रोत केन्द्र के रूप में सहायता प्रदान करना तथा सांस्कृतिक सायन्त्रिक संचार एवं कलादर्शन के तकनीकी सूचना सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करना एवं साथ-साथ भारत तथा विदेशों में सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षाणिक संस्थानों के शोध कर्त्ताओं को सहायता प्रदान करना है। कलानिधि के संग्रह, देशी तथा विदेशी अनेक भाषाओं में हैं। इसमें स्रोत वस्तुओं की संख्या, अमुद्रित एवं मुद्रित, 6 लाख से अधिक है।

कार्यक्रम (क)

संदर्भ पुस्तकालय

31 मार्च, 2007 को पुस्तकालय में 12 भाषाओं में, जिनमें कुछ विदेशी भाषाएँ भी सम्मिलित हैं, मुद्रित के 1,36,344 खण्ड हैं। यह पुस्तकें, लगभग एक हजार विषय सूची पत्रों के साथ, विस्तृत क्षेत्र के विषयों पर आधारित हैं। इनमें पुरातत्त्व शास्त्र, मानव विज्ञान, संरक्षण, संस्कृति, लोक परम्परा, इतिहास, मानविकी विषय, संग्रहालय, साहित्य, रंगमंच, सूचना विज्ञान, दर्शन तथा भाषा-विज्ञान जैसे विषय सम्मिलित हैं। पुस्तकालय में श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा श्री निर्मल कुमार बोस जैसे अनेकों प्रमुख विद्वानों के संग्रह मौजूद हैं। इन संग्रहों में मौजूद पुस्तकें, सूची पत्र के अंश हैं परन्तु भौतिक रूप ले इन्हें अलग स्थान पर रखा गया है।

डॉ० कपिला वात्स्यायन का निजी संग्रह

डॉ० कपिला वात्स्यायन ने पुस्तकों एवं अन्य सामग्रियों का अपना निजी संग्रह इ०गा०रा०क०केन्द्र को दान स्वरूप दिया । प्रथम भाग में लगभग 5,000 पुस्तकें एवं अन्य सामग्री प्राप्त हुईं जिनमें से 4400 पुस्तकों का अवाप्ति तथा 800 पुस्तकों को वर्गीकृत एवं सूचीबद्ध किया गया एवं कम्प्यूटर में डाला । अन्य सामग्रियों में 2500 सामयिकी, 250 संगोष्ठी पत्र एवं प्रतिवेदन, नृत्य तकनीकों पर 600 छायाचित्र, बहुत से फोटोनिगेटिव्ज़ एवं 70 डायरी तथा कैलेण्डर एवं 12 ऑडियो-वीडियो एवं टेप रील सम्मिलित हैं। यह क्रम सामग्री प्राप्ति के साथ आगे भी चलता रहेगा।

वर्ष 2006-2007 में, 3977 खण्डों का वर्गीकरण किया गया तथा उन्हें सूचीबद्ध करके ऑनलाइन कैटलॉग में डाला गया जिससे उन पुस्तकों तक पहुँचना और आसान हो जाए। 3000 खण्डों की जिल्दबन्दी की गई, पुस्तकालया में आने वाली सभी पत्रिकाओं की सूची की कम्प्यूटर में डाला गया तथा इ०गा०रा०क०केन्द्र संदर्भ पुस्तकालय में आने वाली पत्रिकाओं के 8875 विशेषांकों की डेटा प्रविष्टि का कार्य पूरा किया गया। पुस्तकालय ने 2498 पाठकों को सेवा प्रदान की, जिसमें इ०गा०रा०क०केन्द्र के कर्मचारी सदस्य भी सम्मिलित हैं।

पत्र-पत्रिकाएँ

पुस्तकालय इस वर्ष 243 शोध एवं तकनीकी पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना रहा। ये मानवशास्त्र पुरातत्त्वशास्त्र, कला, ग्रन्थसूची, पुस्तक समीक्षा, कम्प्यूटर एवं सूचना-विज्ञान, संरक्षण, सार्वजनिक प्रदर्शन कला, लोक-साहित्य, इतिहास, मानविकी, भाषा विज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, मुद्राशास्त्र, दर्शन शास्त्र, कठपुतली, धर्मशास्त्र, समाजविज्ञान, रंगमंच एवं क्षेत्र अध्ययन से सम्बन्धित हैं।

ग्रन्थ सूचियाँ

इ०गा०रा०क०केन्द्र में ए०बी०आई० ए० परियोजना

ए०बी०आई० ए० परियोजना विद्वानों का एक अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क है जो सटीक ग्रन्थ सूची डाटा बेस, जिसके अन्तर्गत दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशियन कला एवं पुरातत्त्व शास्त्र के प्रकाशन आते हैं, में सहयोग कर रहे हैं। यह परियोजना 1997 में अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों एवं एशिएन शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एशियन स्टडीज़ (आई० आई० ए० एस०) ने सांस्कृतिय सहयोग पर युनेस्को के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर भी किया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में अक्तूबर, 2002 में ए०बी०आई०ए० इंडिया कार्यालय की स्थापना पोस्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट ऑफ आर्कियोलॉजी (पी०जी०आई०ए०आर०) श्री लंका एवं इ०गा०रा०क०केन्द्र के सहमति ज्ञापन के हस्ताक्षर के पश्चात् हुई। इस संदर्भ में, इ०गा०रा०क०केन्द्र एवं न्यास की कार्यकारिणी समिति के अनुमोदन से 18 अप्रैल 2002 को आयोजित एक सभा में प्रस्तावित की गई।

जनवरी, 2006 में, लिदेन में, ए०बी०आई०ए० की एक मीटिंग में लिए गए निर्णय के कार्यान्वयन हेतु 12 से 13 फरवरी, 2007 को ढाका, बांगलादेश में 9वीं ए०बी०आई०ए० कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला बांगलादेश स्थित ए०बी०आई०ए० समन्वय कार्यालय एवं इण्टरनेशनल सेन्टर फॉर स्टडी ऑफ बंगाल आर्ट (आ०सी०एस०बी०ए०) ढाका द्वारा संयुक्त रूप से

आयोजित की गई थी। ए०बी०आई०ए० कार्यशाला से पूर्व, 8 से 11 फरवरी, 2007 को बोगरा (बांगला देश)में 7 वाँ इण्टर्नेशनल कांग्रेस ऑन बंगाल आर्ट का आयोजन किया गया। 16 देशों से लगभग 100 प्रतिनिधियों ने, बांगला देश एवं पूर्वी भारत की मूर्त्तिकला, वास्तुकला, चित्रकला, शिलालेख तथा मुद्राशास्त्र पर विचार-विमर्श करने हेतु इसमें भाग लिया। ए०बी०आई०ए० कार्यशाला में ए०बी०आई०ए०परियोजना के सहयोगी भारत, श्रीलंका, मलेशिया तथा नीदरलैण्ड ने भाग लिया। इ०गा०रा०क०केन्द्र के सदस्य सचिव एवं ए०बी०आई०ए०परियोजना के अध्यक्ष डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्त्ती ने अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन तथा ए०बीआई०ए० कार्यशाला के लिए इ०गा०रा०क०केन्द्र के प्रतिनिधिमण्डल की अगवनी की । डॉ० रमेश चन्द्र गौड़ विभागाध्यक्ष (कलानिधि) तथा इ०गा०रा०क०केन्द्र में ए०बी०आई०ए० परियोजना के समन्यवायक, प्रो० एस० सत्तार, मानद निदेशक, दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र इ०गा०रा०क०केन्द्र बैंगलूर, डॉ० मधु खन्ना, विभागाध्यक्ष (कलाकोश), सुश्री आशा गुप्ता, बिब्लियोग्राफर एवं डॉ० ओ०एन० चौबे, वरिष्ठ प्रलेखन सहायक प्रतिनिधिण्डल के सदस्य थे।

इ०गा०रा०क०केन्द्र ने अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्तुतियाँ दी:-

1. डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्त्ती द्वारा *सोशल साइकी ऑफ बंगाल टेराकोटा (ब्रिक) टेम्पल्स ।*
2. प्रो० एस० सत्तार द्वारा *बंगाल हीरोस्टोन्स इन कम्पेरेटिव कॉन्टेक्स्ट ।*
3. डॉ० मधु खन्ना द्वारा *नवा दुर्गाज़ ग्रीन गौडेसेज ऑफ बंगाल : ए पैराडिम ऑफ इकनॉमिक सस्टेनेबिलिटी।*
4. डॉ० के०के० मिश्र द्वारा रचित तथा डॉ० आर०सी० गौड़ द्वारा प्रस्तुत *मैपिंग ऑफ इंडिया थ्रु वूमैन्स क्रिएटिविटी ऑफ सूई-धागा विद स्पेशल रेफ्रेंस टू कांथा एण्ड फुलकारी ऑफ इंडिया, बांगलादेश एण्ड पाकिस्तान।*

कार्यशाला के दौरान इ०गा०रा०क०केन्द्र में चल रही ए०बी०आई०ए० परियोजना का देश प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया गया। आलोच्य वर्ष में उपर्युक्त परियोजना से सम्बन्धित निम्नलिखित कार्य किए गए।

- ए०बी०आई०ए० डाटा बेस पुनर्सम्पादित रिकार्डों के पश्चात् 326 रिकार्डों को तीसरे खण्ड में सम्मिलित करने हेतु लिदेन कार्यालय में प्रेषित कर दिया गया है।
- 105 नए रिकार्डों का सम्पादन किया गया ।
- विद्वानों द्वारा 453 रिकार्ड टिप्पणी के साथ (कार्य पत्रक पर) तैयार किए गए।
- ए०बी०आई०ए० डाटा बेस में 137 नए रिकार्ड तैयार किए गए।

समझौते के अनुसार, 01 जनवरी, 2007 से इ०गा०रा०क०केन्द्र ए०बी०आई०ए० परियोजना का समन्वय कार्यालय है। उपर्युक्त कार्यशाला के दौरान ए०बी०आई०ए० पीठ, औपचारिक रूप से निवर्तमान पदाधिकारी पी०जी०आई०ए०आर०,श्री लंका के प्रो० निर्मल डि सिल्वा द्वारा इ०गा०रा०क०केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० के०के०चक्रवर्ती, को सौंपी गई।

प्रलेखन

पाण्डुलिपि पुस्तकालय

विभिन्न विषयों पर भारत एवं विदेशों में अवस्थित अप्रकाशित भारतीय पाण्डुलिपियों को बिखरी हुई अवस्था में पड़ी जो है तथा जिन तक पहुँचना शोधकर्त्ताओं के लिए अत्यन्त कठिन कार्य है, को संग्रहीत करने के दीर्घावधिक कार्य के उद्देश्य की पूर्त्ति करने हेतु इ०गा०रा०क०केन्द्र ने माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश/डिजिटल संग्रह के रूप में एक पाण्डुलिपि पुस्तकालय का निर्माण किया है जिस में लगभग 20,000 माइक्रोफिल्म कुण्डलियों में 2.5 लाख से अधिक पाण्डुलिपियाँ हैं जिनमें से लगभग आधे से अधिक को डिजिटाइज्ड़ किया जा चुका है।

इस संग्रह में गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी एण्ड रिसर्च सेन्टर चैन्नई, डॉ० यू०वी स्वामीनाथन इंस्टीट्यूट, मैसूर; सरस्वती भवन लाइब्रेरी वाराणसी; ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट एण्ड मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, थिरूअनन्तपुरम, श्री राम वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, त्रिपुनितुरा; जे०एम०एस० सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजौर; राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, उज्जैन; गवर्नमेंट म्यूज़ियम, अलवर; खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना; श्री रणबीर संस्कृत रिसर्च इंस्टीट्यूट, जम्मू ; एल० डी० इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद; श्री चैतन्य रिसर्च इंस्टीट्यूट, कोलकाता; जुमा मस्जिद ऑफ बाम्बे ट्रस्ट, मुम्बई; भण्डारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे; वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे; मणिपुर स्टेट कला अकादमी, इम्फाल; मणिपुर स्टेट म्यूज़ियम, इम्फाल, मणिपुर स्टेट आर्काइव्स, इम्फाल; पीपुल्स म्यूज़ियम, काकचिंग, मणिपुर तथा अन्य प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की पाण्डुलिपियाँ सम्मिलित हैं।

माइक्रोफिल्मांकन परियोजनाएँ (बाह्य)

आलोच्य वर्ष के दौरान इ०गा०रा०क०केन्द्र की विभिन्न बाह्य परियोजनाओं में 655 माइक्रोफिल्म कुण्डलियों का उत्पादन किया गया जिनमें 5809 पांण्डुलिपियों तथा 4,07,480 पृष्ठों का समावेश है। आलोच्य वर्ष के दौरान कार्य की प्रगति का विस्तृत ब्यौरा इस प्रकार है:

परियोजनाएँ	वर्ष के दौरान अर्जित कुण्डलियों की संख्या	पाण्डुलिपियों/ पन्नों की संख्या	दिनाङ्क	विषय /भाषा लिपि	
जी०ओ०एम०एल०,	155	49975	10.09.89	संस्कृत/तेलुगु देवनागरी,पुराण, इतिहास, वेद	चेन्नई
आर०ओ०आर०आई०, अलवर	69	8500	22.04.04	संस्कृत/देवनागरी, ज्योतिष काव्य, उपनिषद्	
ओ०आर०आई०,	431	60000	11.02.2004	संस्कृत/तेलुगु देवनागरी, ज्योतिष औषधि, व्याकरण	मैसूर,

जी०ओ०एम०एल०, चैन्नई

क) गर्वनमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चैन्नई इ०गा०रा०क०केन्द्र की रूचि के विभिन्न विषयों जैसे पुराण, काव्य, न्याय, इतिहास, व्याकरण, प्रयोग, स्तोत्र, अद्वैत, धर्म, वेदान्त, वैदिक साहित्य, मीमांसा, संग्रह, ज्योतिष विद्या, गृह्य सूत्र, उपनिषद्, मंत्र, जैन धर्म, कोश विज्ञान इत्यादि पर दुर्लभ पाण्डुलिपियों के विशाल भण्डार का संरक्षक है। यह पाण्डुलिपियाँ संस्कृत भाषा में विभिन्न लिपियों जैसे ग्रन्थ, तेलुगु में हैं। ये कागज़ तथा ताड़ पत्र दोनों पर उपलब्ध है।

जी०ओ०एम०एल०चैन्नई में माइक्रोफिल्मांकन का कार्य 10.09.1989 से आरम्भिक लक्ष्य 45000 पाण्डुलिपियों से आरम्भ हुआ। तत्पश्चात् इसे बढ़ा कर 49975 कर दिया गया था । इस समय हम ने लगभग 3327 माइक्रोफिल्म कुण्डलियाँ एकत्रित कर ली हैं जिसमें 46806 पाण्डुलिपियों (2113435पृष्ठों)का समावेश हैं। अनुमान है कि यह परियोजना वर्ष 2008 के अन्त तक पूर्ण हो जाएगी ।

ख) ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर

इ०गा०रा०क०केन्द्र ने ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर को भी इस परियोजना हेतु चुना जिस में संस्कृत पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है। इनमें केन्द्र के रुचिकर विषयों का विशाल

संग्रहों का समावेश है, --व्याकरण, ज्योतिष शास्त्र, प्रयोग, निबन्ध, निघण्टु, अद्वैत, आगम, श्रौतसूत्र,नाटक शैव धर्म, सामवेद इत्यादि जो तेलुगु, ग्रन्थ, कन्नड़, देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं। कागज़ एवं ताड़ पत्रों दोनों पर रचित पाण्डुलिपियों को माइक्रोफिल्मांकन के लिए चुना गया ।

ओ०आर०आई , मैसूर के सम्पूर्ण संग्रहों में से 60000 पाण्डुलिपियों को माइक्रोफिल्मांकन के लिए चुना गया। वर्ष के अन्त तक 1161 कुण्डलियों, जिनमें लगभग 8417 पाण्डुलिपियों (645207 पृष्ठों) का समावेश है, का माइक्रोफिल्मांकन किया गया।

ग) राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, अलवर

इ०गा०रा०क०केन्द्र ने अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट के आठों केन्द्रों, जो जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, कोटा, जयपुर, चित्तौड़गढ़, भरतपुर एवं अलवर में स्थित हैं, को चुना । आर०ओ०आर०आई०के अलवर केन्द्र में विभिन्न विषयों पर जैसे वेद, दर्शन, इतिहास, पुराण, भक्ति, काव्य इत्यादि जो देवनागरी लिपि में हैं, संस्कृत पाण्डुलिपियों का विस्तृत भण्डार है।

8500 पाण्डुलिपियों के माइक्रोफिल्मांकन का कार्य 22 अप्रैल, 2004 से आरम्भ हुआ। वर्ष के अन्त तक 433 माइक्रोफिल्म कुण्डलियों का, जिनमें 3237 पाण्डुलिपियों (248837 पृष्ठों)का समावेश है, माइक्रोफिल्मांकन किया गया ।

माइक्रोफिश

सामग्री आदान-प्रदान के एक समझौते के अन्तर्गत, आई०एन०आई०ओ०एन० इनियन रशिया से 1 अप्रैल, 2006 से 31 मार्च, 2007 की अवधि में संदर्भ पुस्तकालयने 235 माइक्रोफिश अर्जित किए। इस संग्रह में एशियन इम्पीरियल हिस्ट्री, सोवियत यूनियन, सोशल हिस्ट्री, सेन्ट्रल एशियन हिस्ट्री, स्टैटिस्टिक्स ऑफ रशियन (इम्पीरियल) पॉपुलेशन इत्यादि से सम्बन्धित रशियन पत्रिकाएँ हैं।

स्लाइड्स एवं फोटोग्राफ्स

इ०गा०रा०क०केन्द्र ने जम्मू, चंडीगढ़ तथा पटियाला के संग्रहालयों में कूल्लु के त्यौहार में प्रदर्शन के लिए रखे गए कला-वस्तुओं का फोटो प्रलेखन किया गया। इनमें 699 फोटोग्राफ्स तथा 653 स्लाइडस हैं। जिन संग्रहालयों को चुना गया वह हैं हिमालयन हेरिटेज़ म्यूज़ियम, जम्मू; शीशमहल म्यूज़ियम तथा किला अन्दरून पटियाला एवं जम्मू के निजी संग्रह ।

इन संग्रहों का विस्तृत ब्योरा निम्नलिखित है-

1. हिमालयन हेरिटज़ म्यूज़ियम - यहाँ जम्मू ,कश्मीर एवं लद्दाख की संस्कृति की सामग्रियों के संग्रहों को रखा गया है। कश्मीरी बर्तनों का फोटो प्रलेखन किया गया ।
2. शाश्वत आर्ट गैलरी, जम्मू- यहाँ जम्मू की पहाड़ी शैली की चित्रकलाएँ, आभूषण तथा सज्जा की वस्तुओं के फोटोग्राफ लिए गए ।
3. वेदपाल मेमोरियल म्यूज़ियम, जम्मू - चित्रकलाओं एवं सज्जा की कला वस्तुओं के फोटोग्राफ लिए गए ।
4. गवर्नमेंट आर्ट गैलरी एण्ड म्यूज़ियम, चंडीगढ़- यहाँ गान्धार शैली की मूर्त्तिकलाओं के फोटोग्राफ लिए गए।
5. शीशमहल म्यूज़ियम एवं किला अन्दरून, पटियाला-यहाँ चित्रकलाओं, मूर्त्तिकलाओं एवं तैल चित्रकलाओं के फोटोग्राफ लिए गए ।

संरक्षण प्रयोगशाला

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास उपकरणों से सुसज्जित एक संरक्षण प्रयोगशाला है जो केन्द्र के अभिलेखित संग्रहों के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन की सभी आवश्यकताओं की पूर्त्ति करता है। यह जागरूकता अभियान तथा धरोहर वस्तुओं के प्रबन्धन पर मूल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी प्रबन्ध करता है।

आलोच्य वर्ष में किए गए संरक्षण कार्य निम्न हैं-

1. राजा दीन दयाल संग्रह की हस्तलिखित पंजिका ।
2. संदर्भ पुस्तकालय तथा राम शरण त्रिपाठी पुस्तक संग्रह से 52 पुस्तकें ।
3. महावीर जैन पुस्तकालय की पाण्डुलिपियाँ, साथ ही पाण्डुलिपियों के पृष्ठों को ठीक करना एवं हाथ से बने बक्सों को अम्ल रहित करना ।
4. तिब्बिया कॉलेज, दिल्ली की 450 पाण्डुलिपियों का संरक्षण।
5. विनोद सेना संग्रह से 31 पुस्तकें ।
6. आर० पी० मिश्र मानचित्र सफाई एवं उन के किनारों पर लगे सेलो टेप को हटाना ।
7. रबारी वस्त्रों को धूमीकृत करना ।
8. राजतरंगनी की सी०एम०सी० लाइनिंग ।

9. इण्डियन नेशनल बिब्लियोग्राफी : 1971, 1973, 1980-81, 1984 के चारों खण्डों को धूमीकृत, शुष्क तथा नम धुलाई एवं अम्ल रहित करना ।

10. हरिकथा संग्रह की पुस्तकों का धूमीकृत करना ।

संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ

1. 7 से 15 फरवरी, 2007 तक भाई वीर सिंह पुस्तकालय में *प्रिवेंटिव कंज़र्वेशन ऑफ मैनुस्क्रिप्ट्स* पर एक सात दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। 35 पाण्डुलिपियों को निवारक संरक्षण दिया गया जिसमें पुन: परिग्रहण, शुष्क एवं नम सफाई, अम्ल रहित करना तथा भण्डारण प्रबन्धन सम्मिलित हैं।

2. लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय में निवारक संरक्षण पर आयोजित 45 दिनों की कार्यशाला ।

3. भोगी लाल इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी में पाण्डलिपियों का निवारक संरक्षण पर कार्यशाला।

4. लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय में *केयर एण्ड कंज़र्वेशन ऑफ मैनुस्क्रिप्ट* पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यशाला ।

कार्यक्रम (ग)

सांस्कृतिक अभिलेखागार

सांस्कृतिक अभिलेखागार में साहित्यिक एवं वैयक्तिक इतिहास, वाचन, चित्र, जनजातीय एवं लोक कला, संगीत आदि विभिन्न विधाओं से सम्बद्ध, विद्वानों, कलाकारों तथा विशेषज्ञों से प्राप्त मूल सामग्री एवं उसकी प्रतियाँ वर्गीकृत एवं सूचीबद्ध की जाती है। सांस्कृतिक विनिमय से प्राप्त वैयक्तिक एवं लोक संग्रहों से अभिलेखागार का परिवर्द्धन होता है।

अर्जन

1. ब्रुनर के चित्रों का अर्जन : ब्रुनर्स की इच्छा के अनुसार, ब्रुनर्स के न्यासधारियों विशेषकर डॉ० (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन की पहल के माध्यम से इ०गा०रा०क०केन्द्र को स्वर्गीय एलिजाबेथ ब्रुनर द्वारा 852 तैल एवं द्रव रंग सेकैनवस एवं कागज़ पर बने चित्रों को अर्जित किया। इस संग्रह में माता-पुत्री की जोड़ी ने हंगेरी के आरम्भिक दिनों से लेकर उनकी भारत यात्रा तथा भारत में उनका लम्बा आवास एवं भारत में उनके कार्य, मुख्यत: 20वीं शताब्दी के आरम्भ में किए गए सम्मिलित हैं। संग्रह के परिरक्षण, परिग्रहण एवं कैटलॉग का कार्य प्रगति पर है। अब तक 300 चित्रों का कैटलॉग किया जा चुका है।

2. पश्चिमी बंगाल के 121 टेरा कोटा मंदिरों के फोटो प्रलेखन पर शुम्भनाथ मित्रा का संग्रह जिसमें 1149 नगेटिव, सूचीपत्र एवं जिला मानचित्र भी सम्मिलित है।

3. प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायक प्राणनाथ के वी०सी०डी० जो उनकी पुत्री द्वारा भेंट स्वरूप प्राप्त हुए।

4. डॉ० अखिलेश मित्तल संग्रह : फिराक़ गोरखपुरी के चुने हुए ऑडियों रिकार्डों की सी०डी०तैयार करना।

5. वी०ए०के० रंगराव संग्रह (हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत के 608 78आर०पी०एम० रिकार्ड)। सम्पूर्ण सूची एवं सूची पत्र तैयार किए गए ।

6. हरिकथा संग्रह : धूमायन एवं पुनर्भण्डारण हेतु सूची तैयार की गई ।

7. बालान नाम्बियार संग्रह (1800 स्लाइड्स) 300 स्लाइड के लिए सूची पत्र तैयार किए गए।

निम्नलिखित संग्रहों को डिजिटाइज़ किया गया

क) शम्भू साह संग्रह

ख) सुनील जाना संग्रह

ग) हेनरी कार्टियर ब्रेसन संग्रह

घ) राजा दीन दयाल संग्रह की पी०ओ०पी०

प्रलेखन

श्रव्य-दृश्य

प्रारम्भ से ही इ०गा०रा०क०केन्द्र, समुदायों की जीवन शैली तथा उनकी धार्मिक प्रक्रियाओं एवं महान हस्तियों के साक्षात्कार का प्रलेखन करता रहा है । ऑडियो वीडियो एकक के पास एक सूचीबद्ध पुस्तकालय है, जो कि अन्तर्विभागीत्य एवं बाह्य दोनों प्रयोगकर्त्ताओं के लिए उपलब्ध है। इस वर्ष के कुछ मुख्य प्रलेखित कार्य डायस्पोरा कार्यक्रम एवं नारीवाद परियोजना से सम्बन्धित हैं। इस वर्ष निम्नलिखित प्रलेखन किए गए।

i) जनजाति पुष्प त्योहार *बाहा* /यह मध्य एवं पूर्वी भारत के जनजाति समुदायों का वसन्त ऋतु का त्योहार है। झारखण्ड के टोली-नायकों के साक्षात्कार के रूप में उनके मौखिक इतिहास को रिकार्ड किया गया।

ii) नारीवाद परियोजना के अन्तर्गत पश्चिमी बंगाल *पल्लीगीती* -- स्त्रियों के गीतों का प्रलेखन किया गया।

iii) नारीवाद शोध परियोजना के अन्तर्गत *मेसेज फ्रॉम दि हार्ट्स ऑफ विमैन ऑफ वेस्ट बंगाल* शीर्षक से एक ऑडियो सी०डी० तैयार की गई ।

iv) वसन्त ऋतु से सम्बन्धित धार्मिक अनुष्ठानों एवं मधुश्रावणी पर्व पर मधुबनी चित्रकारों को प्रलेखित किया गया ।

v) 5 से 8 जनवरी, 2007 तक उत्स : भारतीय प्रवासियों के सृजक पदचिह्न पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके लिए *एन इनसाइडट* शीर्षक से एक फिल्म बनाई गई थी। यह वेस्ट इंडीज फ्रेंच केरैबियन द्वीप गोवाडेलूप में भारतीयों के आगमन के 150 वर्ष मनाए जाने की घटनाओं को उजगार करता है।

vi) आई०जी०एन०सी०ए० एण्ड इंडियन डाएस्पोरा शीषर्क से एक फिल्म तैयार की गई जिसे डाएस्पोरा के दौरान दिखाया गया ।

vii) गौड़ीया नृत्य की दो उपकथाओं दशावतार एवं शिव पंचमहिमा की शूटिंग का कार्य सुश्री महुआ मुखर्जी द्वारा किया गया ।

viii) हिन्दी में यक्षगान प्रस्तुति का प्रलेखन एवं अभिलेखन किया गया ।

viii) अकीदत के रंग : मस्जिदों तथा दरगाहों में इस्लाम में भक्ति एवं संगीत की प्रस्तुतियों पर एक ऑडियो वीडियो तैयार किया गया ।

ix) ग्वालियर तथा बेहात (मध्य प्रदेश) में आयोजित तीन दिवसीय ध्रुपद समारोह का प्रलेखन।

x) ओरछा (मध्य प्रदेश) में ग्वालियर में स्मारकों की धरोहर का प्रलेखन ।

फिल्म निर्माण के बाद के कार्यों में निम्नलिखित कार्य सम्मिलित हैं :

- वृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी महेश दत्त मिश्र के साथ लिए गए साक्षात्कार को सम्पादित किया गया ।
- ओम शान्ति धाम के 30 मिनट के दो उपकथाओं का सम्पादन एवं वॉइस ओवर का कार्य किया गया ।
- बैंगलूर के ऋत्विजों की सहायता से फिल्म निर्माण के बाद 11 दिन का विशाल कार्य अप्थोरयामा सोम यज्ञ, किया गया ।
- आचार्य नरेन्द्र देव पर, डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा दिए गए व्याख्यानों को अभिलेखित करके उन्हें आचार्य नरेन्द्र देव स्मारक कार्यक्रम के लिए लखनऊ भेजा गया ।
- रामलीला के निर्माण के बाद का कार्य किया गया । इ०गा०रा०क०केन्द्र ने कलातंरग के लिए निम्नलिखित 20 एपिसोड, दूरदर्शन भारती पर प्रसारण के लिए तैयार किए।

1. रामलीला की शो-रील
2. तारिका वध
3. अहिल्या उद्धार
4. अशोक वाटिका
5. सीता स्वयंवर
6. लक्ष्मण परशुराम संवाद
7. कैकेयी अन्तर्द्वन्द्व
8. मंथरा
9. कैकेयी दशरथ संवाद
10. राम-पितृ वाक्य परिपालक
11. राम वन यात्रा
12. दशरथ मरण
13. भरत मिलाप
14. सीता हरण
15. लंका दहन
16. रावण वध
17. रामनगर रामलीला
18. प्रो० वी०एन मिश्र के साथ साक्षात्कार
19. प्रो० एन मैरी शिम्मेल के साथ साक्षात्कार
20. प्रो० मैक्स्वेल के साथ डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा साक्षात्कार

प्रसार

निम्नलिखित फिल्मों की डी वी डी रोम तैयार करके उनका विमोचन किया गया तथा अब वे विक्रय हेतु उपलब्ध हैं:-

- ऐहोले : क्रेडल ऑफ इण्डियन आर्किटेक्चर
- द टाकिंग रॉक्स ऑफ बादामी
- बिहाइंड द मास्क
- श्रवणबेलगोला - द जैन हैरिटेज साइट
- एकोज़ ऑफ द पास्ट बीजापुर

- सेलेश्येल कोरोनेशन- महामस्तकाभिषेकम् ऑफ बाहुबली - कर्कल
- द लेगेसी ऑफ राज दीन दयाल
- गोतिपुआ
- हम्पी - द वर्ल्ड हैरिटेज फेस्टिवल
- सेक्रेड डांसिस एट द हेमिस फेस्टिवल
- टेम्पल इन्स्ट्रमेण्ट्स ऑफ केरल
- लाई-हराओबा
- महाकुम्भ - इन सर्च ऑफ द नेक्टर
- दक्षिण कन्नड़-द लैण्ड ऑफ द मदर गौडेस
- म्यूरल्स ऑफ केरल
- नवकलेवर - द न्यू एम्बॉडिमेण्ट
- मिरासन्स ऑफ पंजाब-बॉर्न टु सिंग
- रामलीला - द ट्रेडिशनल परफॉर्मेंस ऑफ रामायण
- सात सुर
- द लिगेसी ऑफ ताना भगत
- बृहदीश्वर, तंजावुर - महाकुम्भाभिषेक
- थांग-ता-मार्शल आर्ट ऑफ मणिपुर
- उरुमि - फाइटिंग फॉर सर्वावल
- ओरल ट्रेडिशन ऑफ वेदाज़
- वांगला-ए गारो फेस्टिवल

फोटोग्राफी

यह प्रभाग नियमित रूप से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभी कार्यक्रमों के फोटो प्रलेखन का कार्य करता रहा है। यह फोटोग्राफ प्रेस जनप्रचार, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की समाचार पत्रिका विभाग तथा अन्तर्विभागीय विद्वानों तथा प्रभागों के लिए सर्वदा उपलब्ध रहते हैं।

अन्य गतिविधियाँ

कलानिधि प्रभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ० रमेश चन्द्र गौड़ ने डाक्यूमेंटेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर इंडियन स्टेटिस्टिकल इंस्टीट्यूट बैंगलूर द्वारा आयोजित इण्टरनेशनल कान्फ्रेंस ऑन सिमैंटिक

एण्ड डिजिटल लाइब्रेरी, 2007 में, भाग लिया। उन्होंने *डिजिटाइजेशन एण्ड डिजिटल प्रिजर्वेशन ऑफ इण्डियन कल्चरल हेरिटेज* पर एक शैक्षिक प्रस्तुति दी तथा *ऑन्टोलॉजी* विषय के एक तकनीकी सत्र के सभापति रहे। इस सम्मेलन में लगभग 14 देशों से 300 सहभागियों ने भाग लिया ।

कलानिधि दिवस

कलानिधि प्रभाग ने 23 जनवरी, 2007 को वसन्त पंचमी के दिन अपना 18वाँ वार्षिक दिवस मनाया। 24-25 जनवरी, 2007 को कलानिधि प्रभाग की गतिविधियों तथा संसाधनों पर एक दो दिवसीय तक विचार-विमर्श सत्र का आयोजन किया गया । *हाउ टू इम्प्रुव रेफ्रेंस लाइब्रेरी सर्विसेज* . पर एक सामूहिक विचार-विमर्श एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया। इ०गा०रा०क०केन्द्र के पदाधिकारियों, विद्वानों, संयुक्त सचिव, लोक सभा पुस्तकालय, निदेशक लाल बहादुर शास्त्री इंस्टीट्यूट ऑफ मैंनेजमेंट तथा श्रीमती कान्ता भाटिया, भूतपूर्व पुस्तकालय अध्यक्ष यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वानिया, यू०एस०ए० ने प्रस्तावना तथा सामूहिक तर्क-वितर्क में भाग लिया ।

नेट-वर्किंग

दैसाकु इकेदा कार्नर

भारत सोका गाकी (बी०एस०जी०) के सहयोग से *कल्चर ऑफ पीस* पर एक देसाकुइकेदा प्रभाग की स्थापना 28 अक्तूबर, 2006 को पुस्तकालय में की गई। विद्वानों, अध्येताओं तथा शंति, शिक्षा एवं संस्कृति से जुड़े सभी जन से संवाद स्थापित करना केन्द्र का प्रमुख उद्देश्य है। इस प्रभाग में डॉ० इकेदा द्वारा अनेक विभिन्न विषयों पर लिखे हुए 64 शीर्षक है बहुत से अमुद्रित संग्रहों के साथ मौजूद हैं जो सोका गाकी इण्टरनेशनल द्वारा दान में दिए गए हैं। पुस्तकालय सेवाओं में सलाह देने के लिए एक रीडर्स फोरम का आयोजन किया गया, जिसमें शैक्षणिक, विद्वानों एवं सामान्य उपयोग कर्त्ता सम्मिलित थे।

साँस्कृतिक सायन्त्रिक संचार

1994 में इस प्रयोगशाला की स्थापना, यू०एन०डी०पी० की सहायता से चलने वाली बहुमाध्यमिक प्रलेखन परियोजना "स्ट्रेंगथेनिंग" नेशनल फैसिलिटी फॉर इंटर-एक्टिव मल्टी मीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सेज़ द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के दिशा निर्देश से केन्द्र का दल इंटर-एक्टिव बहुमाध्यमिक प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में सक्षम हुआ । इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की संपूर्ण एवं अन्त:सम्बद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के यथार्थ पुन: सृजन के लिए किया जा रहा है।

परियोजना में उच्च स्तरीय बहुमाध्यमिक सामग्री-निर्माण हेतु नए संरचना-मॉडल्स, विकास प्रक्रियाओं तथा पुनः-अनुप्रयोज्य सॉफ्टवेयर टूल्स की संकल्पना, विकास एवं अनुप्रयोग किया गया है यूएनडीपी परियोजना परिपूर्ण होने के बाद इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास ने सरकारी एवं सहयोगी परियोजनाओं तथा अन्य संस्थाओं से दल द्वारा अर्जित धन राशि से सांस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार के कार्यकलापों को जारी रखने का निर्णय लिया है। सी आई०एल० की मुख्य गतिविधियों में केन्द्र द्वारा पूरी की गई परियोजनाओं पर आधारित सांस्कृतिक सूचना का, नई कला प्रोद्यौगिकी की सहायता से प्रचार-प्रसार, अन्तर्विभागीय सी०डी०रोम परियोजना का वितरण एवं वेबसाइट सम्मिलित है:-

प्रभाग की गतिविधियोंको निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है:-

- अन्तर्विभागीय सी डी रोम परियोजनाएँ
- अन्तर्विभागीय डिजिटाइज़ेशन परियोजनाएँ
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट
- कार्यशाला /सेमिनार
- प्रायोजित परियोजनाएँ

आलोच्य वर्ष में संस्कृति के लिए तकनीकी अनुप्रयोग के अनुपम क्षेत्र में सी०आई०एल०द्वारा किए गए कुछ प्रमुख कार्यों का विवरण निम्नलिखित है:-

अन्तर्विभागीय सी डी रोम परियोजनाएँ

देवनारायण

देवनारायण कथा राजस्थान की एक मौखिक परम्परा है। यह जनपद सम्पदा द्वारा चलाए गए जीवन शैली अध्ययन का एक अंश है तथा सी.आई. एल. इस पर एक अन्तर्क्रियात्मक सी.डी. रोम तैयार कर रहा है जो इस परम्परा के विषय में पूरी जानकारी देगा। कहानी फड़ नामक विशाल पर्दे पर बनी चित्रकला के चारों ओर घूमती है। भोपा नामक एक व्यावसायिक गायक अपने गीतों तथा अभिनय के माध्यम से कहानी को आगे बढ़ाता है। दृश्य छवि, गति तथा दर्शकों की प्रतिक्रियाओं के अन्तस्सम्बन्ध पुनस्सृजित किए जा रहे हैं। सी डी रोम पूर्णप्रायः है।

टू पिल्ग्रिम्स

एलिज़ाबेथ सास एवं एलिज़ाबेथ ब्रुनर्स की जीवनी एवं कार्य

हंगेरी में जन्मी माँ-बेटी की जोड़ी, एलिज़ाबेथ सॉस एवं एलिज़ाबेथ ब्रुनर ने भारत वर्ष को ही अपना घर बना लिया था। उन्होंने अपनी आध्यात्मिक जिज्ञासा तथा कल्पना दृष्टि के कारण भारत की

ओर प्रस्थान किया । उनके इच्छा पत्र के अनुसार उनके कलाचित्रों के विशाल भाग का उत्तराधिकारी इ० गा० रा० क० केन्द्र है। यह परियोजना ब्रुनर्स के कार्यों को अतंर्क्रियात्मक सी० डी० के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयत्न है। कार्य की प्रगति इस प्रकार हैं :-

डाटाबेस के सम्पादन तथा सत्यापन का कार्य पूर्ण हो चुका है। वीडियो क्लिप्स का चुनाव एवं पद्मश्री ब्रुनर की अस्पष्ट आवाज़ के लिए कैप्शन प्रतिलेखित करने का कार्य पूर्ण होने की अवस्था में है। उनकी जीवनी तथा उनसे साक्षात्कार के कुछ चुने हुए वीडियो क्लिप के समाकलन का कार्य अभी लम्बित है। सी०डी० रोम के परीक्षण तथा प्रमाणीकरण का कार्य उसके पश्चात् आरम्भ जाएगा।

गीत गोविंद

जयदेव द्वारा रचित 12 वीं शताब्दी की इस रचना ने देश के सभी क्षेत्रों में विभिन्न कला रूपों को प्रेरित किया है। नृत्यों, चित्रकलाओं तथा लघुचित्रों में कविताओं को उनके अनूठी शैलियों में प्रस्तुत किया गया है। यह वर्तमान परियोजना कुछ चुने हुए कला स्वरूपों को, शैक्षणिक तथा आध्यात्मिक पुट के साथ एक अन्तर्क्रियात्मक सी० डी० में किया गया है।

चित्रकलाओं के चयन के लिए निम्नलिखित पुस्तकों का डिजिटाइजेशन किया गया :

1. एम० एस० रंधावा द्वारा कांगडा गीत गोविंद
2. डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा जौर गीतगोविंद
3. डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा मेवाड़ गीतगोविंद
4. डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा आसाम गीतगोविंद
5. डॉ०कपिला वात्स्यायन द्वारा बूंदी गीतगोविंद
6. डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा गीतगोविंद के लघुचित्र (उत्तरी गुजरात तथा जयपुर)
   - शोधकर्ताओं ने आगे के संदर्भों के लिए जौर चित्रकलाओं की पुस्तक से पुस्तक सूची तैयार की है।
   - आई०जी०एन०सी०ए० में उपलब्ध गीतगोविंद पाण्डुलिपियों की सूची बेबसाइट पर डाल दी गई हैं। पाण्डुलिपियों की संकलित सूची में, पाण्डुलिपियों में उद्धृत दृष्टान्तों के विषय में कोई सूचना सम्मिलित नहीं हैं।
   - सी०डी०रोम का समाकलन, परीरक्षण तथा प्रमाणीकरण ।

बृहदीश्वर मंदिर

तंजौर स्थित बृहदीश्वर मंदिर, उन दो मंदिरों में से एक है जिन्हें जनपद सम्पदा प्रभाग के क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रमुख परियोजना के रूप में लिया गया है। इस परियोजना के अन्तर्गत इ० गा० रा० क० के० ने अनेकों पुस्तकें प्रकाशित की। यह सी० डी० रोम मंदिर के अन्दर तथा बाहर का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

गतिविधियाँ

एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर- साउथ इंडिया एवं तंजौर बृहदीश्वर : *एन अर्किटेक्चरल स्टडी* नामक पुस्तकों से, बृहदीश्वर मंदिर के प्रमुख मंडप के स्थापत्य के लिए, प्रतिमाओं के चयन का कार्य आरम्भ कर दिया गया है। बहुत सी प्रतिमाएँ अभी भी उपलब्ध नहीं है जिन्हें दूसरे स्रोतों से एकत्रित किया जाएगा।

अन्तर्विभागीय डिजिटीकरण परियोजना

माइक्रोफॉर्म्स से पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण : इ० गा० रा० क० के० के रिप्रोग्राफी संग्रह में, भारत के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों तथा विदेशों से एकत्रित किए गए दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ सम्मिलित हैं। ये मुख्यत: माइक्रोफिल्म तथा माइक्रोफिश के रूप में है। वर्ष 2006-2007 के दौरान 3390 (लक्ष्य 4000 कुण्डलियों का) माइक्रोफिल्म कुण्डलियों का, जो पाण्डुलिपियों के 21.24 लाख पृष्ठों पर आधारित हैं, का डिजिटीकरण किया गया। कुल 1316 माइक्रोफिल्म कुण्डलियों का (इ० गा० रा० क० के० संग्रहों में उपलब्ध 20500 कुण्डलियों में से) जिनमें 82.54 लाख पृष्ठ हैं, डिजिटीकरण दिया गया।

माइक्रोफिश के डिजिटीकरण का कार्य अभी शीघ्र ही आरम्भ किया गया था । 103544 पृष्ठों पर आधारित, (एस०बी०पी०के०) बर्लिन संग्रह के 2700 माइक्रोफिश का डिजिटीकरण किया गया।

छायाचित्रों का डिजिटीकरण : शंभूनाथ शाह तथा हेनरी कार्टियर ब्रेसन के छाया चित्र संग्रहों (क्रमश: 51 एवं 107 फ्रेम्स) का डिजिटीकरण किया गया। राजा दीन दयाल संग्रह के 687 छायाचित्रों का भी डिजिटीकरण किया गया। डायस्पोरा प्रदर्शनी के लिए लगभग 400 छायाचित्र सम्पादित तथा डिजिटीकृत किए गए।

जनपद सम्पदा प्रभाग की लोक चित्रकला परियोजना : फोक पेंटिंग्स ऑफ राजस्थान एण्ड मध्य प्रदेश परियोजना के लिए लगभग 1000 छायाचित्रों का सम्पादन/ डिजिटीकरण किया गया।

स्लाइड्स का डिजिटीकरण : इ०गा०रा०क०केन्द्र में आयोजित थार प्रदर्शनी के लिए 176 स्लाइड्स, आई०आई०सी० (*सुई धागा* प्रदर्शनी से सम्बधित) 300 स्लाइड्स तथा डायस्पोरा पर श्यामला देवी संग्रह से लगभग 200 स्लाइड्स का डिजिटीकरण किया गया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र वेबसाइट (डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट आईजीएनसीए डॉट गर्व डॉट इन) : आलोच्य वर्ष में 31 संस्थानों के लिए पाण्डुलिपियों के कैटलॉग पर विषय सूची, डायस्पोरा नारीवाद पर सामग्री आदि इ०गा०रा०क०केन्द्र के अन्य प्रभागों से प्राप्त सूचनाओं को वेबसाइट पर डाला गया। पिछले छः माह में वेबसाइट ने औसतन 14 लाख प्रतिमास के हिसाब से हिट्स प्राप्त किया। (एन०आई०सी० द्वारा विश्लेषित)।

प्रायोजित परियोजनाएँ

पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण

1. द ओरियंटल रिसर्च लाइब्रेरी, श्रीनगर : (वर्ष 2004-06 की अवधि में) प्रथम चरण में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की ओर से, ओरिएंटल रिसर्च लाइब्रेरी श्रीनगर में लगभग 600000 पृष्ठों पर आधारित 1406 पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण किया गया। डिजिटीकृत पाण्डुलिपियों में योग वशिष्ठ, महाभारत, आयुर्वेद, शैवधर्म इत्यादि (संस्कृत एवं फारसी भाषाओं में) सम्मिलित हैं।

   परियोजना के दूसरे चरण का कार्य, ओरियंटल रिसर्च लाइब्रेरी, श्रीनगर में मौजूद सभी पाण्डुलिपियों के लिए अगस्त 2006 को आरम्भ किया गया। दूसरे चरण में 9,00,000 पृष्ठों का डिजिटीकरण किया गया तथा जुलाई-अगस्त, 2007 तक कार्य पूर्ण होने की अपेक्षा है।

2. द नेशनल म्यूज़ियम, नई दिल्ली : इ० गा० रा० क० केन्द्र नेशनल म्यूज़ियम, नई दिल्ली के पाण्डुलिपि संग्रहों के डिजिटीकरण कार्यों में कार्यरत है। 31 मार्च 2007 तक दो हजार सात सौ उनसठ (9.6 लाख पृष्ठों पर आधारित) पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण किया जा चुका है।

3. द नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मंगोलिया, उलनबाटर : इ० गा० रा० क० के० ने नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मंगोलिया में उपलब्ध गंजूर एव तंजूर पाण्डुलिपियों के 406 खंडों के डिजिटीकरण परियोजना को अन्तिम रूप देने के लिए इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन्स (आई०सी०सी०आर०) को तकनीकी सहयोग प्रदान किया । प्रशिक्षण अवधि में लगभग 75 पाण्डुलिपियाँ (47000 पृष्ठों) का डिजिटीकरण किया गया जिनकी प्रतिलिपि आई० जी०

एन० सी० ए० तथा आई० सी० सी० आर० में उपलब्ध हैं। शैक्षणिक संदर्भों के लिए सभी पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ आई० जी० एन० सी० ए० तथा आई० सी० सी० आर० के पुस्तकालयों में उपलब्ध कराई जाएंगी।

4. लाल बहादुर शास्त्री इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, नई दिल्ली : पुराने समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं के लगभग 500 पृष्ठों का डिजिटीकरण किया गया।

वेबसाइट डिजाइनिंग

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण तथा नेशनल म्यूज़ियम इंस्टीट्यूट – मानित यूनिवर्सिटी नई दिल्ली के लिए वेबसाइट की संरचना तथा विकास करके एन०आई०सी० साइट पर डाला गया। आलोच्य वर्ष में, वार्षिक अनुरक्षण सविंदा के अंश के रूप में विषय सूची में, अद्यतनीकरण तथा आशोधन की सेवाएँ भी प्रदान की जाएगी।

संगोष्ठियाँ /कार्यशालाएँ

19 से 20 दिसम्बर, 2006 को पटना में कमीशन फॉर साइंटिफिक एण्ड टेकनिकल टर्मिनोलॉजी द्वारा आयोजित कार्यशाला में कलासम्पदा डिजिटल लाइब्रेरी : रिसोर्सेज ऑफ इंडिया कल्चरल हेरिटेज शीर्षक से श्री पी० झा०,निदेशक, सी०आई०एल०ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

सी०आई०एल०की एक चार सदस्यीय टीम ने कर्मचारियों के लिए पाण्डुलिपियों के डिजिटाइज़ेशन के प्रशिक्षण हेतु नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मंगोलिया का दौरा का दौरा किया। यह परियोजना आई० सी० सी० आर० द्वारा प्रायोजित थी।

कलाकोश प्रभाग

कलाकोश प्रभाग केन्द्र के मुख्य अनुसन्धान तथा प्रकाशन स्कन्ध के रूप में कार्य करते हुए कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विद्यापरक संदर्भो में अनुसन्धान करता है। यह शास्त्र को संदर्भ के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

कार्यक्रम क

कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का कोश)

कलातत्त्वकोश भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का एक कोश है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यापक शोध एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात् 250 संकल्पनाओं के शब्दों की एक सूची तैयार की गई है। प्रत्येक संकल्पना की गवेषणा विभिन्न विषयों के लगभग 300 मूलग्रन्थों से की गई है। इस शृंखला का प्रथम ग्रन्थ वर्ष 1988 में प्रकाशित हुआ था और तब से अब तक इसके पाँच खण्ड निकल चुके हैं ।

कलातत्त्वकोश के संदर्भ कार्ड :-

यह इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी कार्यालय में होने वाला कलातत्त्वकोश का सतत् कार्य है, जिसके अन्तर्गत (पहले से सूचीबद्ध) सम्बद्ध ग्रन्थों से संदर्भ कार्ड तैयार किए जाते हैं। यह संदर्भ कलातत्त्वकोश के शब्दों से सम्बद्ध हैं, जिनका उपयोग प्रत्येक शब्द पर लेख लिखने के लिए किया जाता है। इस वर्ष 3153 नए कार्डों के संदर्भ एवं उनका अनुवाद का कार्य तैयार किया गया।

कार्यक्रम ख

कलामूलशास्त्र

(भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा निरन्तर कार्यक्रम है- वैदिक साहित्य, आगम , तंत्र, वास्तुकला, मूर्त्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य और नाट्य आदि सभी भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत

ग्रन्थों का समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों एवं अनुवाद सहित, उन्हें ग्रन्थमाला में प्रकाशित करना। इस शृंखला के अतिरिक्त केन्द्र ने कुछ अन्य ग्रन्थों को प्रकाशित करने का कार्य लिया है, जो कलामूलशास्त्र शृंखला के लिए सन्दर्भ ग्रंथों का काम करेंगे।

प्रकाशन

क) समीक्षाधीन अवधि में इस शृंखला के अन्तर्गत निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हुए इलस्ट्रेटिड डिक्शनरी ऑफ वैदिक रिचुअल्स : रेखाचित्र, दृष्टान्त एवं छायाचित्र सहित डॉ० एच०जी०रानाडे द्वारा संकलित कार्य ।

ख) निम्नलिखित कार्य पूर्ण होने के अन्तिम स्तर पर हैं :-

वैदिक अथवा श्रौत संस्कार (कृष्ण यजुर्वेद)

1. बौधायन श्रौत सूत्र भवस्वामी के भाष्य सहित (खण्ड-1, 2 एवं 3) : प्रो० टी०एन०धर्माधिकारी ने इसका समालोचनात्मक सम्पादन किया तथा प्रस्तावना लिखी। इसके तीनों खण्डों का कार्य पूरा हो चुका है एवं चौथे खण्ड की टाइप सैटिंग का कार्य चल रहा है।

वैदिक/श्रौत संस्कार (सामवेदीय)

2. जैमिनीय-ब्राह्मण : प्रो० एच०जी०रानाडे द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद किया। तीसरे खण्ड की सी०आर०सी० का कार्य अंतिम दौर में है। छठे प्रफू की जाँच की जा रही है।

आगम (वैष्णव, पञ्चरात्र)

3. ईश्वरसंहिता : (पाँच खण्डों में)प्रो० एम०ए० लक्ष्मी ततार्चार द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित तथा (स्वर्गीय) प्रो०वी०वरदाचारी द्वारा विस्तृत प्रस्तावना के साथ पुनरीक्षित। यह प्रकाशनाधीन है।

आगम (शैव)

4. क्रियाक्रमद्योतिका- क्रियाक्रमद्योतिका का आंशिक समालोचना स्वर्गीय डॉ० एस० जानकी एवं अनुवाद प्रो० फ्रेडरिक द्वारा किया गया। चैन्नई के कुप्पूस्वामी शास्त्री अनुसन्धान संस्थान की निदेशिका, श्रीमती कामेशवरी को कार्य सौंपा गया है।

शाक्त तंत्र

5. मंथन-भैरव-तंत्र (कुब्जिकागम) : नेपाल से प्राप्त पाण्डुलिपियों की सहायता से डॉ० मार्क डिक्स्कोवस्की ने विस्तृत टिप्पणियों के साथ यह ग्रन्थ सम्पादित एवं अनुवादित किया ।

सम्पादक ने अनुक्रमणिका के अतिरिक्त शेष कार्य प्रेषित कर दिए हैं। टाईप सेट किए पृष्ठों की कुल संख्या 5579 है।

आगम (शाक्त)

6. तन्त्रसारसंग्रह- दक्षिण भारत के शैव-शाक्त संस्कारों एवं प्रतिमा विज्ञान के इस ग्रन्थ का सम्पादन एवं अनुवाद प्रो० के०टी०पाण्डुरंगी ने किया । इस ग्रन्थ में आगत देवी-देवताओं रेखाचित्र का कार्य अभी शेष है।

अलंकार शास्त्र (सौंदर्यशास्त्र)

7. रसगंगाधर - इसके दोनों खण्डों का समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद प्रो० रमा रंजन मुखर्जी ने किया है। प्रूफ संशोधन हो चुका है तथा प्रि-सी आर सी की प्रतीक्षा है।
8. सरस्वतीकण्ठाभरण :-इसके तीनों खण्डों का समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद डॉ० सुन्दरी सिद्धार्थ ने किया है। सी आर सी की प्रतीक्षा है।

भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का अन्य भारोपीय भाषाओं के साथ सम्बन्ध

9. ग्लासरी ऑफ की आर्ट टर्म्स : (स्वर्गीय) प्रो० विद्यानिवास मिश्र द्वारा 100 शब्दों की शब्दावली तैयार की गई । अधिकांश लेख पुन: लिखे जा रहे हैं एवं टाइप सेंटिग का कार्य वाराणसी में चल रहा है।

संगीत (पूर्वी भारतीय संगीत शास्त्र, उड़ीसा)

10. संगीतनारायण-डॉ० मंदाक्रान्ता बोस द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवादित इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण सामग्री फरवरी, 2006 में सम्पादिका द्वारा दे दी गई है। संशोधन एवं अनुक्रमणिका का कार्य प्रगति पर है। जल्दी ही प्रेस में भेज दिया जाएगा।

संगीत (पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारतीय)

11. नारद कृत संगीतमकरन्द- डॉ० एम विजयलक्ष्मी द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित है। इस ग्रन्थ का कार्य अंतिम चरण में है ।

वास्तुकला एवं नगर योजना

12. समरांगणसूत्रधार - (चार खण्डों में) डॉ० पी०पी०आप्टे एवं श्री सी० वी० काण्ड द्वारा संपादित एवं अनुवादित है । खण्ड 3 एवं 4 की टाईप सैटिंग का कार्य ले लिया गया है जो कि जल्दी ही पूरा होने की आशा है।

ग) अन्य शोध परियोजनाओं पर काम चल रहा है :-

वैदिक कर्मकाण्ड

1. गोपथ ब्राह्मण : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० समीरन चन्द्र चक्रवर्त्ती ।

वैदिक स्वर विज्ञान

2. याज्ञवल्क्य शिक्षा : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० नारायण दत्त शर्मा ।

वैखानस सम्प्रदाय

3. मरीचि-संहिता : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० एस०एन०मूर्त्ति ।

दक्षिण भारतीय प्रतिमालक्षण विज्ञान

4. तंत्र-सम्मुच्चय : सम्पादक एवं अनुवादक : स्वर्गीय प्रो० के० के० राजा।

असाम्प्रदायिक पाँचरात्र

5. हयशीर्ष-पंचरात्र : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० गयाचरण त्रिपाठी

कर्नाटक संगीत

6. रागविबोध : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० रंगनायकी अय्यंगर

वास्तुशास्त्र

7. वास्तु मंडन : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० अनसूया भौमिक

बौद्ध दर्शन

8. शतसाहस्त्रिकाप्रज्ञापारमिता : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० रत्ना बासु

शाक्त तंत्र

9. साधनमाला : सम्पादक एवं अनुवादक : पं० सातकड़ि मुखोपाध्याय

शैवागम

1. अघोरशिवाचार्य पद्धति : सम्पादक एवं अनुवादक : (स्वर्गीय) डॉ० एस० एस० जानकी

खगोल-विज्ञान

2. राजप्रश्नीय सूत्रम् : सम्पादक एवं अनुवादक : एस०आर०सरमा ।

अंलकार शास्त्र

3. शारदातनय कृत भाव-प्रकाशन : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० जे०पी०सिन्हा

कार्यक्रम (ग)
कलासमालोचना शृंखला
(समालोचनात्मक विद्वता और शोध के प्रकाशनों की शृंखला)

निम्नलिखित प्रकाशन अति शीघ्र इस शृंखला के अन्तर्गत निकाले जाएगें :

1. एलिमेंट्स ऑफ बुद्धिस्ट आइकॉनग्राफी ऑफ आनन्द के० कुमारस्वामी - कृष्ण देव द्वारा सम्पादित ।
2. एक्रॉस द थ्रेशहोल्ड ऑफ इंडिया- मार्था ए० स्ट्रॉन।
3. शारदा एण्ड टाकरी अल्फाबेट्स : ओरिजन एण्ड डेवल्पमेण्ट- बी०के०कौल डिम्बी ।
4. कल्चरल हिस्ट्री ऑफ उत्तराखण्ड-डी०डी०शर्मा
5. इलस्ट्रेटिड बालिसत्र भागवत पुराण- बी०एन०गोस्वामी
6. द भुवनेश्वर टेम्पल ऑफ लिंगराज- आर्ट एण्ड कल्चरल लिगेसी-के०एस०बेहरा।

कार्यक्रम घ
कलाओं का विश्वकोश

न्यूमिस्मैटिक आर्ट्स ऑफ इंडिया प्रो०बी०एन० मुखर्जी

न्यूमिस्मैटिक आर्ट्स ऑफ इंडिया के कुल चार खण्डों में से, खण्ड - I (ऐतिहासिक एवं सौंदर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य) एवं खण्ड II (भारत के कला की एल्बम) का मुद्रण हो चुका है एवं जिल्दबन्दी के लिए प्रेस में दी गई है।

कार्यक्रम ङ
क्षेत्रीय अध्ययन

दक्षिण पूर्व एशिया एकक

इस एकक ने एशिया फ़लोशिप योजना के अन्तर्गत एक महत्त्वपूर्ण परियोजना, जावा एवं बाली में देवी महिषासुर मर्दिनी के रूप की अपनी भारतीय अवधारणा से तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित है, और इसके बहुमूल्य सामग्री एकत्रित की गई।

पूर्वी एशिया कार्यक्रम

प्रकाशन

1. **श्वेनत्सांग एण्ड सिल्क रूट**

आलोच्य वर्ष में (2006-2007)समस्त सामग्री टाइप सैंटिग एवं कॉपी एडिटिंग के बाद मुद्रण के लिए प्रेस में भेज दी ।

2. **कलाकल्प**

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोध पत्रिका का खण्ड-I, अंक-2 प्रेस में भेज दिया गया है एवं प्रकाशन के अंतिम चरण में है।

वैदिक प्रलेखन

समय के साथ वेद विद्या की अनेकों शाखाएँ लुप्त हो चुकी है और बहुत सी शाखाएँ लुप्त होने के कगार पर है। उदाहरणार्थ काण्व शाखा (शुक्ल यजुर्वेद) कथा, कपिष्ठल, मैत्रायणी (कृष्ण यजुर्वेद) एवं कौषीतकी (ऋग्वेद) शाखाएँ विशेष रूप से संकट में है।

वेद की प्रत्येक शाखा के गायन एवं उच्चारण की अनूठी रीति होती है क्योंकि इसकी प्रत्येक शाखा विशिष्टहै। अधिकांश शाखाओं का अपना एक ग्रन्थ विशेष एवं पाण्डुलिपियाँ हैं, जिन्हें उजागर करने की आवश्यकता है। कुछ शाखाएँ केवल एक मन्त्रात्मक संहिता से सम्बद्ध होती है परन्तु उनके अपने ब्राह्म, आरण्यक , उपनिषद्, श्रौत-सूत्र एवं गृह्यसूत्र हैं। इस शाखा के अनुयायी प्राय: अपनी ही शास्त्रीय परम्परा के अनुसार अपने धार्मिक एवं नैमित्तिक अनुष्ठान करते है। हालांकि आधुनिक सभ्यता एवं वर्तमान परिवेश के कारण पौराणिक धार्मिक कृत्य दिन-प्रतिदिन लुप्त होते जा रहे हैं एवं क्रियात्मक रूप से इन यज्ञों का अनुष्ठान करने वाले पंडितों की संख्या, जिन्हें यह ग्रन्थ कंठस्थ थे, वह भी कम हो रही है। जबकि शास्त्रीय परम्परा लुप्त हो गई है।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य भावी पीढ़ी के लिए शास्त्रीय संहिताओं की मौखिक परम्परा और क्रियात्मक धार्मिक अनुष्ठान की परम्परा का संरक्षण एवं विभिन्न कोणों से उनका अध्ययन करना है।

ऋग्वेद की कौषीतकी शाखा के पारम्परिक गायन की वीडियो रिकॉर्डिंग का कार्य पूरा हुआ एवं बाँसवाड़ा राजस्थान में वेद-सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ । बाँसवाड़ा, राजस्थान में केवल दो ही पण्डित इसका शुद्ध गायन करना जानते हैं। यह रिकॉर्डिंग भविष्य में तुलनात्मक अध्ययन के लिए अपरिहार्य है।

पौर्णमाससेष्टि की श्रृव्य रिकॉर्डिंग का कार्य 19-20 फरवरी, 2007 को आलंडी (पुणे के समीप)सम्पन्न हुआ।

वरिष्ठ वैदिक दार्शनिक प्रो० टी० एन० धर्माधिकारी ने दोनों दिन व्याख्यान दिया।

इस वर्ष, वेद रिकॉर्डिंग के अतिरिक्त, शोलापुर में सोम-यज्ञ के प्रलेखन का कार्य भी सम्पन्न किया जाएगा।

नारीवाद: जैण्डर, संस्कृति एवं सभ्यता का नेटवर्क

नारीवाद : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने जैण्डर, संस्कृति एवं सभ्यता नेटवर्क नारीवाद का आरम्भ मार्च 2005 में किया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पना में भारतीय लोकाचार एवं वास्तविकता के प्रांसगिक अनुसन्धान के आदर्श उपस्थापित करने की बात की गई है तथा इसमें कला एवं संस्कृति में महिलाओं के योगदान को हमारे प्रयत्नों के अभिन्न अंग के रूप में दर्शाया गया है । फिर भी इस बात की आवश्यकता है कि महिलाओं की संस्कृति में मौजूद विशाल स्रोत सामग्री को जैण्डर स्टडीज़ पर समकालीन व्याख्यानों के साथ जोड़ा जाए तथा इसको विकृत होने एवं साथ ही साथ अतिसरलीकरण से बचाया जाए। नारीवाद का मुख्य उद्देश्य है महिलाओं के साँस्कृतिक स्रोतों एवं ज्ञान प्रणाली को जैण्डर स्टडीज़ के अभिन्न तत्त्व के रूप में प्रांसगिक बनाना।

प्रकाशन

आलोच्य वर्ष में दीप्ति प्रिया मल्होत्रा की ए पैशन फॉर फ्रीडम द स्ट्रोरी ऑफ किसानिन जग्गी देवी का प्रकाशन हुआ ।

निम्नलिखित शोध प्रकाशन पूर्ण होने वाले हैं-

1. शक्तिका ऑन द एसेन्ट
2. लिबरेशन थ्रू आर्ट (दो खण्डों में)
3. हीलिंग ऑफ द सेल्फ (एसएनडीटी)
4. इंडीजिनस एपिस्टेमोलॉजीज
5. नैन्सी यूर फॉक द्वारा द फर्स्ट बिब्लियोग्राफी ऑन विमैन, रिलीजन एण्ड कल्चर
6. इंदिरा मुखर्जी द्वारा पेंटिग आइडेंटिटीज : थ्री ट्राइबल आर्टिस्ट्स
7. माला भण्डारी द्वारा ओरल हिस्ट्रीज़ ऑफ विमैन सीरीज करवा चौथ; ए रिचुअल ऑफ सुहाग। शोध कार्य प्रगति पर हैं।

प्रकाशित शोध पत्रिकाएँ

1. **टेक्स्ट एण्ड कॉनटेक्स्ट**
   श्री संजय कुमार द्वारा मनु ऑन विमैन : द मीनिंग ऑफ स्वतन्त्र एण्ड इट्स इम्प्लिकेशन्स फॉर विमैन्स फ्रीडम ।

2. **जेण्डर एण्ड विजुअल रिप्रेजेन्टेशन**
   प्रो० रत्नाबाली चटर्जी द्वारा रिप्रेजेन्टेशन ऑफ जेण्डर इन फोक पेंटिंग्स ऑफ बंगाल

3. **रिथिंकिंग एपिस्टेमॉलोजीज़**
   प्रो० सिल्विया मारकोस द्वारा ओरैलिटी एण्ड हॅर्मिन्यूटिक्स ।

4. **प्रो० वीणा पुनाछा द्वारा– राइटिंग विमैन्स लाइव्स :** सम मैथडोलॉजीकल क्वेश्चन्स फॉर फैमिनिस्ट हिस्ट्रियोग्राफी

5. **इण्डियन फैमिनिटीज़**
   डॉ० मधु खन्ना द्वारा– पैराडाइम्स ऑफ फिमेल एम्बॉडीमेन्ट इन द हिन्दु ट्रेडिशन।

जनपद सम्पदा प्रभाग

जनपद सम्पदा, आर्थिक-सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टियों से समुदाय की जीवन शैलियों, परम्पराओं, लोक विद्या तथा कला प्रणालियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन से संबंधित है। मौखिक परंपराओं पर केन्द्रित इस संभाग का कार्यपटल विभिन्न सांस्कृतिक दलों तथा समुदायों के बीच अन्तस्संबंधों को बल देते हुए, बहुविषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन तक फैला है। इस संभाग के कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:-क) मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह (ख) बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ तथा गतिविधियाँ (ग)जीवन शैली अध्ययन (जिसे दो भागों में बाँटा गया है। (1) लोक परम्परा (2) क्षेत्र सम्पदा

कार्यक्रम (क)

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह: इन संग्रहों में मूल अनुकृतियाँ तथा रिपोग्राफिक प्रतिलिपियों का अर्जन, शोध, समीक्षा एवं प्रसार हेतु आधारभूत स्रोत सामग्री के रूप में किया जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किए गए:-

परियोजना

भारत के हस्तकौशल एवं अमूर्त्त विरासत -मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की लोक चित्रकलाएँ : अन्तिमआठ रिपोर्टें :- 1) सांझी 2) पीथोड़ा 3) गोदना 4) ग्वालियर चित्रकला 5) मांडना 6) भील चित्रकला 7) थापा 8) गोदना चित्रकला पूरी हुई। ये रिपोर्ट गहन क्षेत्रीय अध्ययनों एवं ऑडियो विजुअल प्रलेखन पर आधारित थी। एक अलग सी डी गीत, पाठ, फोटोग्राफ्स, ऑडियो एवं वीडियो को उनकी रिपोर्ट के साथ प्रस्तुत किया। आठ मानवजाति फिल्मों को उनकी रिपोर्टों के साथ प्रस्तुत किया गया। शताधिक स्लाइड्स, रेखाचित्रों एवं फोटोग्राफ्स को संकलित किया गया। सम्पूर्ण सामग्री को डिजिटाइज्ड़ किया गया।

सूची-पत्र बनाना

गद्दी पर बने 90 मिनट की अवधि वाले सभी 112 ऑडियो कैसेट्स को डिजिटाईज़ किया गया। गद्दी पर आधारित लगभग 1000 स्लाइडों का एक्सेसन किया गया तथा 800 को कैटलॉग दिया गया।

कार्यलयीय परियोजना *स्पेशियल एण्ड टेम्पोरल प्रोसिसिस अमंग द गद्दीज ऑफ भरमौर,* हिमाचल प्रदेश के दौरान इस सामग्री को एकत्रित किया गया था।

कार्यक्रम (ख)
आदि दृश्य बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य मानव की मौलिक अवबोधन शक्तियों से उद्भूत कलात्मक आविर्भावों का अन्वेषण करना है। सम्भाव्यत: मानव को अपनी दृश्य एवं श्रृव्य आदिम शक्तियों के फलस्वरूप ही संसार के प्रति जागरूकता का बोध हुआ । शैल कला आदि दृश्य कार्यक्रम का महत्त्वपूर्ण संघटक है। आलोच्य वर्ष में विभिन्न राज्यों से शैलकला स्थलों के पाँच क्षेत्रीय अध्ययनों को विस्तृत रूप से प्रलेखित किया गया ।

- **स्टडी एण्ड डाक्यूमेंटेशन ऑफ ट्राईबल आर्ट (रॉक आर्ट) इन उड़िसा (12 से 18 अप्रैल, 2006) :**

  इस यात्रा के दौरान, उड़ीसा के रायगढ जिले के दो जनजाति समुदायों लांजिया सौरा एवं डंगोरिया कोंधा के कलात्मक एवं सामाजिक जीवन को प्रलेखित किया गया। क्षेत्रीय कार्यों में जो सामग्री उत्पादित की गई वह थी- 580 फोटोग्राफ्स, वीडियो एवं ऑडियो रिकॉर्डिंग तथा 10 रेखाचित्र।

- **डाक्यूमेंटेशन ऑफ रॉक आर्ट एण्ड एलाइड सब्जेक्ट्स इन उत्तरांचल (19 से 30 जून, 2006) :**

  इस यात्रा के दौरान, अलमोड़ा जिले के 15 शैलकला स्थलों एवं सात गाँवों को प्रलेखित किया गया। प्रलेखित किए गए शैलकला के स्थान हैं - लाखू- उदयर, पदखनौली, --- कासरदेवी, द्वारसन, चनचारीधर, जैनरी लिसा दीपो, धर्मगाँव, द्दहोली, नौगाँव, देवली दाना, हाटवालघोरा, काफरकोट, फलसीमा एवं जसकोट। डिगोली, कैपदकान, चन्द्रेश्वर, नौगाँव, कटारमल, पैतसल एवं खजांची के गाँवों को भी प्रलेखित किया गया। क्षेत्रीय कार्य में 470 फोटोग्राफ्स, वीडियो-ऑडियो, रिकॉर्डिंग, 46 स्लाइड्स 20 रेखाचित्रों को निर्मित किया गया।

- **डाक्यूमेंटेशन स्टडी ऑफ रॉक आर्ट एण्ड बुद्धिस्ट मॉनेस्टरीज इन लद्दाख रिज़न ऑफ जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट (27 अगस्त से 14 सितम्बर, 2006):**

  इस यात्रा के दौरान, लद्दाख क्षेत्र के लेह एवं कारगिल नामक दो जिलों का, शैलकला प्रलेखन कार्यों हेतु सर्वेक्शन किया गया। लेह एवं कारगिल जिलों में क्रमश: 25 एवं 6 शैल कला स्थलों को प्रलेखित किया गया। लेह जिले के स्थलों के नाम इस प्रकार हैं -शैल कला

प्रलेखन के अतिरिक्त लेह जिले में बौद्ध मठों, प्रासादों, स्थानों, स्तूपों के शैलकला प्रलेखन का कार्य किया गया। इसके उपरान्त, दीस्कित मठ का मुखौटा नृत्य, स्थानीय लोगों की धर्म सम्बन्धी गतिविधियों, विभिन्न मठों के लामाओं के साक्षात्कार, प्राकृतिक सौंदर्य एवं चंग पास के प्राकृतिक दृश्य, पांगोंग झील, खर्दुंगला पास एवं नीमू क्षेत्र को भी प्रलेखित किया गया। क्षेत्रीय कार्यों में निम्नलिखित कार्य निर्मित किए गए : वीडियो-ऑडियो रिकॉर्डिंग, 2300 फोटोग्राफ्स, 180 स्लाइड्स, 30 रेखाचित्र ।

- **डाक्यूमेंटेशन ऑफ रॉक आर्ट एण्ड एलाइड सब्जैक्ट्स इन छत्तीसगढ़ (4 से 14 दिसम्बर, 2006) :**

इस क्षेत्रीय यात्रा के दौरान छत्तीसगढ के रामगढ़ जिले में प्रलेखन का कार्य लिया गया। रायगढ़ जिले के आठ शैलकला स्थलों एवं आठ गाँवों को प्रलेखित किया गया। शैल कला स्थान हैं - बागदरबिल, सिरोली डोंगरी, कर्मागढ(उषाकुथी), ओंगा, पोटिया, (यमुना मादा), बासनाझार, चेरी गोदरी एवं बोटाल्दा (लेखटोप)। सिरोली डोंगरी कर्मागढ़, ओंगा, पोटिया, बासनाझार, सोनवर्षा, गिद्धा एवं बोटाल्दा गाँव है। क्षेत्रीय कार्यों के दौरान जो कार्य किया गया वह हैं- वीडियो रिकॉर्डिंग, 800 फोटोग्राफ्स, 80 स्लाइड्स, 100 रेखाचित्र ।

- **डाक्यूमेंटेशन ऑफ रॉक आर्ट एण्ड एलाइड सब्जैक्ट्स इन झारखण्ड (15 से 25 जनवरी, 2007)**

इस क्षेत्रीय यात्रा के दौरान चतरा एवं हजारीबाग जिलों मे प्रलेखन का कार्य का लिया गया। आठ शैलकला स्थलों एवं दो गाँवो को प्रलेखित किया गया। शैलकला के स्थल हैं - इसको, नौतनंगवा, सिदपा, गौंडा, दिथांनगी, रहम, मंदर, (सप्तहार) एवं खंदार (सप्तहार)एवं गाँव है- इसको एवं बेलवारा। क्षेत्रीय कार्यों में निम्न कार्य निर्मित्र किए गए : 900 फोटोग्राफ्स, वीडियो एवं ऑडियो रिकार्डिंग, 90 स्लाइड्स, 50 रेखाचित्र।

(आदि श्रव्य)

21 से 22 दिसम्बर, 2006 को पंजाबी अकादमी, दिल्ली के सहयोग से श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भगत बाणी परम्पराओं के संगम पर एक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिन भक्तों के कार्य गुरु ग्रंथ साहिब में उद्धृत हैं वे विभिन्न क्षेत्रों से आए एवं उन्होंने विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा । गुरु स्वयं भी अपने प्रवचनों के दौरान विभिन्न भाषाओं का प्रयोग करते थे। गुरु ग्रन्थ साहिब के 5892 स्तोत्रों में से 937 स्तोत्र उन सन्तों एवं भक्तों के हैं जो अपने संस्थापकों की आस्था से भिन्न आस्था के थे। इनमें कबीर के 541 स्तोत्र, बाबा फरीद के

116, नामदेव के 61, रविदास के 40 एवं और भी बहुत से हैं। गुरु स्वयं भी विभिन्न भाषाओं का प्रयोग करते थे क्योंकि वे प्रवचन के दौरान स्थानीय लोकोक्तियों एवं स्थानीय बात-चीत की सरल भाषा का ही प्रयोग करते थे। यह भक्त केवल विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों से ही नहीं आए थे बल्कि विभिन्न जातियों तथा निम्न कहे जाने वाली जातियों एवं अछूत जातियों से भी सम्बन्धित थे। गुरु ग्रंथ साहिब में इस बाणी की उपस्थिति से एक अतुलनीय अंतर्मार्मिक तथा क्षेत्रीय सुवास उत्पन्न होता है। इस परम्परा के अनन्य आन्तरिक क्षेत्रीय सुवास एवं अंत: विश्वास को समझना साथ ही साथ शान्ति, मैत्री, करुणा एवं सभी मानवों में भाई-चारे की भावना को लिखित एवं गीत शब्द के माध्यम से प्रकट करना इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य था। श्रुति परम्परा के अन्तर्गत संगीत परम्परा के पहलुओं पर भी खोज की गई, मुख्यरूप से गुरु ग्रंथ साहिब में उल्लिखित स्तोत्रों को जिन्हें गा कर पढ़ना होता हैं उन्हें संगीतज्ञ मापदण्डों के अनुसार रखा गया है। बाणी के शबदों को एक खास राग में गाया जाता है जिसे गुरुमत कहते हैं। गुरुमत इस धर्म का एक महत्वपूर्ण भाग है एवं सिखों में पूजा का आत्मिक स्वरूप है। यह सेमिनार बाबा फरीद, कबीर, नामदेव, त्रिलोचन, रविदास, धन्ना भक्त, पीपाजी, सन्त एवं साधना जैसे संतो एवं कवियों की बाणी पर केन्द्रित था।

यह सेमिनार चार बृहद् विषयों उद्देश्यों में बटा हुआ था जो इस प्रकार हैं -

1. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य/परिदृश्य
2. गुरु ग्रन्थ साहिब के भक्त कवियों की कविताओं में एवं गीतों को चुनना ।
3. भक्त बाणी की संगीत परम्परा ।
4. भक्त कवि एवं उनका योगदान ।

इस सेमिनार ने धार्मिक अनेकत्व की गूढ़ता को समझने में तथा हमारे अस्तित्व के मूलभूत प्रश्नों के उत्तर का अन्वेषण में हमारी सहायता की।

अक़ीदत के रंग : एक्स्प्रेशन्स ऑफ डिवोशन इन इस्लाम पर एक संगोष्ठी - 21 से 23 मार्च, 2007 को इस्लाम में विशेषकर भारतीय मूल के अनुयायियों में, प्रचलित विभिन्न धार्मिक परम्पराओं पर वाद-विवाद के लिए *अक़ीदत के रंग : एक्स्प्रेशंस ऑफ डिवोशनस इन इस्लाम* शीर्षक से एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस्लाम में मौखिक प्रेषण /प्रसारण की परम्परा *वही* के नुज़ूल के समय से ही चली आ रही है। कुरान की आयतें पैग़म्बर पर, खुदा के संदेशवाहक हज़रत जिब्रैल द्वारा शब्दों के माध्यम से रुह-ए- सादिका (स्वपन के माध्यम से प्रकट होना) सलसलुत्तुल जारास (बजती हुई घण्टियों की आवाज से) एवं खुदा के साथ सीधे संवाद से प्रकट हुई। पैगम्बर साहिब ने इन आयतों का प्रसार जनसाधारण में मौखिक पाठ के माध्यम से ही किया ।

हदीस (पैग़म्बर साहब द्वारा अपने अनुयायियों को बताए गए रास्ते तथा उनके हल) की मौखिक परम्परा, कुरान का पाठ क़ीरात की विभिन्न शैलियों में, जिसे क़ीरात-ए-सबा कहते हैं, विभिन्न साहित्यिक रूप जैसे *हम्द* (खुदा की तारीफ कविता के रूप में) नॉत(पैगम्बर की तारीफ कविता के रूप में)मनक़ीबत(पैग़म्बर के सगे सम्बन्धियों, दोस्तों, सहायकों एवं अन्य धार्मिक हस्तियों की तारीफ कविता के रूप में),मर्सिया (दुखद कविताएँ, विशेषकर जो कर्बला के मैदान में घटी घटनाओं से सम्बन्धित हैं) अवधी के दाहे, दक्कन का अशुरखाना, पंजाब के कबद इत्यादि कुछ ऐसे स्वरूप थे जिन पर संगोष्ठी के दौरान चर्चा हुई ताकि इस्लाम में उत्पन्न साक्षरता एवं प्रदर्शनात्मक परम्पराओं की, जो भारत के लोक एवं क्षेत्रीय परम्पराओं (बहुभाषीय तथा बहुसांस्कृतिक) के साथ-साथ ही उत्पन्न हुई, विभिन्न सिद्धान्तों एवं विश्वासों समन्वय स्थापित करने की तथा दशी प्रवृति का गुण विवेचन किया जा सके ।

इस संगोष्ठी में चार प्रमुख प्रकरणों पर चर्चा हुई। वे थे- क़ीरात भक्ति संगीत, भक्ति गीत, देशी लोक स्वरूप (कथा वार्ता एवं उच्चारण) इसके विभिन्न वर्णनात्मक शैलियों को देखा जैसे सोज़ ख्वानी; विभिन्न साहित्यिक स्वरूप जैसे मर्सिया, सलाम, मनक़ीबत, नोहा एवं क़सीदा, जो वर्णनात्मक शैलियों पर स्थानीय परम्पराओं के प्रभाव पर केन्द्रित हैं जैसे कश्मीर में द्रारूद ख्वानी; इस्लाम में वर्णनात्मक परम्पराओं जिसमें मिलाद, सलाम, दुआ एवं कसीदे सम्मिलित हैं के संरक्षण में स्त्रियों के योगदान का भी अध्ययन किया है।

कार्यक्रम (ग)

जीवन शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न समुदायों की मौखिक परम्पराओं पर विशेष बल दिया गया। यहाँ कलात्मक अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवन शैलियों तथा जीवन कार्यों में सन्निहित रूप से देखा जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लोक परम्परा एवं क्षेत्र-सम्पदा दो मुख्य कार्य क्षेत्र है।

लोक परम्परा

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत साँस्कृतिक समुदायों की उन जीवन शैलियों पर बल दिया गया है जो उनके भौतिक एवं प्राकृतिक निवास स्थान, सामाजिक-साँस्कृतिक एवं अर्थशास्त्रीय विधियों एवं उनके सृजनात्मक तथा रचनात्मक जीवन से प्रकट होता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाएँ, क्षेत्रीय आधार पर किए गए अध्ययन के चारों ओर घूमती हैं। वर्ष 2006-2007में, निम्नलिखित परियोजनाएँ प्रारम्भ हुईं:-

कल्चर ऑफ पीस

इ० गा० रा० क० केन्द्र पिछले कई वर्षों से अपने विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों द्वारा कल्चर ऑफ पीस पर से संवाद प्रारम्भ करने में सम्बद्ध है।

1. 14 अप्रैल से 23 अप्रैल, 2006 को भारत सोका गाकी (बी० एस० जी०) के सहयोग से *बिल्डिंग ए कल्चर ऑफ पीस फॉर द चिल्ड्रन ऑफ द वर्ल्ड* पर एक प्रदर्शनी एवं कार्यशाला रखी गई। यह प्रदर्शनी अन्तर्राष्ट्रीय सोका गाकी एस०जी०आई०, जापान द्वारा आयोजित की गई एवं शान्ति के अवरोध, धर्म और शान्ति, शान्ति के पथ, राष्ट्र की भूमिका, संवाद एवं सहिष्णुता, स्व:प्रभुत्व प्रभृति जैसे विषय प्रतिबिम्बित किये गए एक अन्य प्रदर्शनी चिल्ड्रन ड्रीम्स फॉर पीस भी लगाई गई जिसमें किशोरों ने विश्व में शन्ति हेतु अपने विचार व्यक्त किए।

2. 28 अक्तूबर, 2006 को भारत सोका गाकी के सहयोग से डॉ० इकेदा *इन प्रस्यूट ऑफ पीस* पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। डॉ० एन० राधाकृष्णन् ने इस संगोष्ठी के मूलभाव पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर गाँधी, किंग, इकेदा शान्ति के रिक्थ का निर्माण (28 अक्तूबर से 4 नवम्बर, 2006) पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई तथा बी० एस० जी० ने इ०गा०रा०क०केन्द्र का कल्चर ऑफ पीस कॉर्नर स्थापित करने हेतु पुस्तकें भेंट की।

प्राकृत-मानव सम्बन्ध

1981 में यूनाइटिड नेशन ने *अर्थ चार्टर* नामक एक महत्त्वपूर्ण घोषणा-पत्र अपनाया । यह विभिन्न मानवीय समुदायों के धार्मिक-सांस्कृतिक प्रभावों का प्रकृति के साथ गहन सम्बन्धों पर तथा उनका प्रकृति के संरक्षण के प्रति जो उनके जीवन शैलियों एवं संस्कृति में पाई जाने वाली नीतिशास्त्र एवं सौंदर्यशास्त्र की जननी है, वचन बद्धता पर केन्द्रित था ।

इसी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इ०गा०रा०क०केन्द्र के तत्त्वाधान में 23 अप्रैल, 2006 को *फ्लावर फैस्टिवल ऑफ ट्राइबल रिजोयसिंग* दि बहा उत्सव पर एक द्विवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया । यह त्यौहार पूर्वी और मध्य भारत के जनजाति लोगों के लिए सभी गूढ़ दार्शनिक अर्थों को लेकर आता है। यह त्यौहार केवल नृत्य एवं संगीत के रूप में ही नहीं अपितु रचनात्मक प्राख्यापनों सहित सफलतापूर्वक आयोजित किए गए। इस त्यौहार में 11 जनजाति संघों से लगभग 100 जनजाति के लोगों ने भाग लिया।

देश-काल के साँस्कृतिक वर्ग

इ०गा०रा०क०केन्द्र हिमाचल प्रदेश के गद्दी समुदाय पर एक अन्तर्विभागीय परियोजना चला रहा है। इस परियोजना से कई हजार स्लाइडों एवं सैकड़ों घण्टों के ऑडियो-वीडियो प्रलेखन, इसके अतिरिक्त रेखाचित्रों, नक्शों एवं चित्रकलाओं का कार्य सम्पन्न हुआ। केन्द्र की गद्दी समुदाय से जुड़े रहने तथा इसे सुदृढ़ बनाने के प्रयत्न में 30 अप्रैल, 2006 को अखिल भारतीय गद्दी जनजाति विकास समिति के सहयोग से गद्दी समुदाय का एक दिवसीय वार्षिक उत्सव *नौला* का आयोजन किया गया । उत्सव का आरम्भ नौला नामक धार्मिक प्रक्रिया से तथा भगवान शिव को धन्यवाद करते हुए, जो सभी शुभ सामाजिक तथा किसी व्यक्ति विशेष के जन्म एवं मरण दिन पर नृत्य संगीत,गायन, बलि इत्यादि के साथ किया गया । इस उत्सव में धर्मशाला एवं भरमौर से 35 कलाकारों के समूह को एवं गद्दी के 1000 प्रतिभागियों को आमन्त्रित किया गया ।

उत्तर पूर्व अध्ययन कार्यक्रम

ए स्टडी ऑन सोशियोलॉजिकल रैमिफिकेशन्स ऑफ द प्रोपोज्ड़ एशिएन हाइवे इन द नार्थ-ईस्ट : यह अध्ययन एशियन राजपथ के हिंटरलैण्ड के सांस्कृतिक धरोहर पर जो कि एशियन राजपथ के अभिन्यास तैयार करने में एक घटक एवं क्रम के रूप में आता है तथा राजपथ के अस्तित्त्व से सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों पर पड़ने वाले प्रभाव पर केन्द्रित है। प्राचीन एवं मध्य काल में राजनीतिक संरचनाओं के सांस्कृतिक लचीलापन, वस्तुओं का व्यापार, दक्षिण-पूर्वी एशिया से उत्तर पूर्व भारत के रास्ते मध्य एशिया (सिल्क रूट)तक का लम्बे मार्ग का व्यापार भी इस अध्ययन में केन्द्रित है।.यह अध्ययन, संस्कृति, समाज, राज्य एवं बाजार,मुख्यत: समुदायों के जीवन एवं उनके पर्यावरण विशेष उद्यम पर विशेष रूप से केन्द्रित है। निम्नलिखित घटनाएँ इस कार्यक्रम के अंश थे :-

1. 3 से 4 अगस्त, 2006 को फरीदाबाद (हरियाणा) में *सोशियोलॉजिकल रेमिफिकेशन्स ऑफ द प्रोपोज़्ड एशियन हाइवे* परियोजना पर एक दो दिवसीय कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य उत्तर-पूर्व के संस्कृति परक उद्यमवृति मॉडलों के विकास के लिए प्रस्ताव को साकार करना था। इस अवसर पर भारत के उत्तर-पूर्व विशेषकर आसाम के सामाजिक आर्थिक स्थिति पर प्रस्तावित एशियन राजपथ से पड़ने वाले प्रभाव पर ओ०के०डी० इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल चेंज एण्ड डेवलपमेंट गुवाहाटी द्वारा तैयार किए गए प्रारम्भिक रिपोर्ट पर चर्चा हुई ।

2. 22 से 23 जनवरी, 2007 को अगरतला (त्रिपुरा) में *टेंजिबल एण्ड इंटेंजिबल हैरिटेज़ ऑफ द नार्थ-ईस्ट* परियोजना एक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विभिन्न

क्षेत्रों के लगभग 60 प्रतिभागियों ने इस विचार-विमर्श में हिस्सा लिया। इसमें कला, साहित्य, इतिहास, रंगशाला, जनजाति अध्ययनों एवं स्वयंसेवी समुदायों के प्रतिभागियों, उद्यमता एवं विकास के संस्कृति विशेष से सम्बद्ध सरकारी निकायों के विद्वान सम्मिलित है।

3. 23 से 24 फरवरी, 2007 को अगरतला (त्रिपुरा) में *सोशियोलॉजिकल रेमिफिकेशन्स ऑफ द प्रोपोज़्ड एशियन हाइवे* परियोजना के अन्तर्गत उत्तर-पूर्व में विशेषकर त्रिपुरा के संदर्भ में उद्यमता विकास पर विस्तृत सलाहकार समिति की एक दो दिवसीय सभा एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस सभा में समिति के एवं सिविल संस्था के सदस्यों एवं राज्य के उद्यमता एवं विकास से सम्बद्ध व्यक्तियों एवं संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

सिक्किम की जैव-सांस्कृतिक विविधता

सिक्किम में हैरिटेज ऑफ सिक्किम : फ्रॉम-प्रि हिस्ट्री टू कंटेम्पोरेरी वर्ल्ड का प्रमुख अध्ययन/सर्वे केन्द्र के दो विद्वान की देख-रेख में किया जा रहा है। यह अध्ययन मूर्त एवं अमूर्त दो भागों में विभक्त किया गया है। सिक्किम की मठ परम्पराओं विशेष कर सांगा छोलिंग एवं पेमायांग्त्से मोनास्ट्रीज एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। इसमें अमूर्त पहलुओं की जैव-सांस्कृतिक विविधता का भी अध्ययन किया गया है।

क्षेत्र-सम्पदा परियोजना

केरल में पी०आर० जी माथुर द्वारा क्षेत्र सम्पदा ऑफ गुरुवयूर टेम्पल फेस 1 खण्ड 2 का कार्य सम्पन्न हुआ। अध्ययन के प्रथम चरण में, मंदिर की वास्तुकला, मंदिर के स्थान का सदुपयोग तथा मूर्त्तिकला पर केन्द्रित किया गया था । अध्ययन का दूसरा चरण, मंदिर के स्थान तथा धार्मिक क्रियाओं, मंदिर में आयोजित एवं सामाजिक संरचना, मंदिर में आयोजित उत्सव एवं त्यौहारों के अध्ययन पर केन्द्रित थे। दोनों चरणों के संयुक्त मोनोग्राफ प्रकाशन के लिए तैयार हैं।

प्रकाशन

- रोमा चटर्जी की पुस्तक मोनोग्राफ ऑन ज़ात्र, डिस्कोर्स, एण्ड लोकैलिटी: फोकलोर एण्ड द प्रोडक्शन ऑफ पुरुलिया एज ए बोडर जोन प्रेस में है।
- डॉ० आर०नागास्वामी की पुस्तक आइकॉनोग्राफी ऑफ बृहदीश्वर टेम्पल मुद्रणाधीन है।

व्याख्यान

1. 6 सितम्बर, 2006 को विद्यासागर यूनिवर्सिटी, मेदिनीपुर के डॉ०अभिजीत गुहा ने *एनकाउन्टर विद वूमैन इन झारग्राम* पर व्याख्यान प्रस्तुत किया । यह व्याख्यान पश्चिमी बंगाल के

मेदिनीपुर जिले के उप-विभाग झारग्राम में निर्धन स्त्रियों का एक दल विश्वविद्यालय के अध्यापकों एवं छात्रों के साथ, कार्यशाला आयोजन को लेकर हुई मुठभेड़ को वैज्ञानिक विवरण देने का एक प्रयास था। राष्ट्रीय प्राध्यापक डॉ० वीणा मजूमदार ने इसकी अध्यक्षता की ।

2. 10 से 11 अक्तूबर, 2006 को प्रो० एल०के०महापात्र ने छठा प्रो० एन०के०बोस०स्मारकीय व्याख्यान दो भागों में प्रस्तुत किया । प्रथम भाग *अन्डरस्टैंडिंग ट्राइब्ल ट्रांसफोर्मेशन इन इंडिया* शीर्षक से था जिसमें डॉ० बोस ने, जनजाति समुह द्वारा हिन्दु धार्मिक रीति रिवाज़ों एवं अन्य सांस्कृतिक विशेषताओं को विनम्रता पूर्वक ग्रहण करने पर, अंग्रेजी साम्राज्य में जनजाति समुदायों तथा निचली सतह पर रहने वालों के बीच उभरती हुई धनिष्ठता तथा स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न जनजातियों के लाभ की सुरक्षा के देखते हुए भारत सरकार द्वारा नए नियम पारित करने पर, अपने विचार प्रकट किए हैं और व्याख्यान के दूसरे भाग में इंटिग्रेशन ऑफ द ट्राइबल इन द इंडियन सोसाइटी : ए व्यू फ्रॉम उड़ीसा शीर्षक से भारतीय समाज में जनजातियों के पर चर्चा की है।

कलादर्शन प्रभाग

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला के विभिन्न प्रभागों के कार्यकलापों के प्रस्तुतीकरण एवं नानाविध कलाओं के बीच सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इस प्रभाग ने अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुति की एक अद्भुत शैली विकसित की है। यह प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यकलापों से सम्बन्धित प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, सभाओं एवं व्याख्यानों का आयोजन करता है।

बाल जगत कार्यक्रम

1. ***कल्चर ऑफ पीस फॉर द चिल्ड्रन ऑफ द वर्ल्ड*** : भारत सोका गाकी, यूनाइटेड नेशन्स एसोसिएशन, यूनाइटेड नेशन्स इन्फोर्मेशन सेन्टर के सहयोग से आयोजित की गई।14 अप्रैल को प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया एवं 23 अप्रैल, 2006 तक यह चलती रही। इस अवधि में, इ॰गा॰रा॰क॰ केन्द्र अभिलेखागार एवं भारत सोका गाकी अभिलेखागार ने प्रतिदिन फिल्मों का (लगभग 12 शो) का आयोजन किया। दिल्ली, गुड़गाँव, गाजियाबाद एवं नौएडा के स्कूलों ने यह प्रदर्शनी देखी।

   इ॰गा॰रा॰क॰के॰ में एक लम्बे कपड़े का स्क्रॉल फैला दिया गया था जिसपर स्कूली बच्चों के विश्व शान्ति पर अपनी एकता संबंधी विचार प्रकट कर सकें।

   दिल्ली म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के चार स्कूलों द्वारा शान्ति विषय पर थियेटर अभिनय एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

2. बोर्न फ्री आर्ट स्कूल, बैंगलूर से आए बंधुआ मजदूरी से मुक्त बाल-मजदूरों पर आधारित फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी का उद्घाटन इ॰गा॰रा॰क॰के॰ के माटीघर में श्रीमती गीता सिद्धार्थ, सेक्रेटरी जनरल, इंडियन काउंसिल ऑफ चाइल्ड वेलफेयर द्वारा 6 नवम्बर, 2006 को किया गया। उद्घाटन समारोह के तुरंत बाद बोर्न फ्री आर्ट स्कूल, बैंगलूर के बच्चों द्वारा थिएटर अभिनय का आयोजन किया गया।

   प्रदर्शनी के पूरक के रूप में तथा इसे इ॰गा॰रा॰क॰के॰ की परियोजना आदि दृश्य से जोड़ते हुए छाया चित्रों पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसका उद्देश्य सांस्कृतिक सामाजिक तथा विषयपरक प्रलेखन हेतु फोटोग्राफी के प्रयोग की संभावनाओं का अन्वेषण था। मूर्तिकार एवं फोटोग्राफर श्री जॉन देवराज के मार्गदर्शन में भारतीय विद्या भवन की कक्षा 8 वीं और नवीं के लगभग 30 छात्रों ने बार्न फ्री स्कूल के बच्चों से फोटोग्राफी सीखी।

इ०गा०रा०क०के० के अभिलेखागार से

1. माननीय संस्कृति एवं पयर्टन मंत्री, भारत सरकार के आगमन के अवसर पर इ०गा०रा०क०के० की संकल्पनाओं की, जो इसके सांस्कृतिक अभिलेखागार के संग्रहों तथा प्रकाशनों पर आधारित है, उजागर करते हुए एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम

1. द थार : ए लिविंग डेज़र्ट : इ०गा०रा०क०के० के जनपद-सम्पदा विभाग के आदि दृश्य एवं क्षेत्र सम्पदा अध्ययनों का अनुमोदन करते हुए ब्रिगेडियर रि० एच० एस० नारंग द्वारा लिए गए छाया चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन डा. गिरिजा व्यास, अध्यक्षा, राष्ट्रीय नारी आयोग द्वारा 7 दिसम्बर 2008 को किया गया। यह प्रदर्शनी 20 दिसम्बर, 2006 तक चली। इस प्रदर्शनी ने थार को, इसके फूल पौधों तथा जीव जन्तुओं के छाया चित्रों के साथ, इसकी प्रबलता, कर्मठ जन-जाति, उनकी गतिविधियाँ, रहन-सहन तथा उनको कलाओं के साथ, चित्रित किया।

डायस्पोरा परियोजना

प्रदर्शनी उत्स : भारतीय प्रवासियों के सृजन चिह्न भारतीय मूल के लोगों के एक सांस्कृतिक नेटवर्क पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटन 5 जनवरी, 2007 को केन्द्र के न्यासी एवं आई० सी० सी० आर० के अध्यक्ष डॉ० कर्णसिंह ने किया। इस अवसर पर संदर्भ सामग्री जैसे फिल्म, पुस्तकें डॉ० पॉल पोलनस्की, श्री रुद चन्द्रा, डॉ० क्लेम सीचरण, प्रो० मारियाना बुधोस एवं श्री तुषार उनदकात से प्राप्त हुए। इस अवसर पर भारतीय मूल के बहुत से फिल्म निर्देशक, लेखक, कलाकार और विद्वान मौजूद थे। उस्ताद अमजद अली खां ने केन्द्र के डॉक्युमेंटरी कलात्मक फिल्म्स का लोकार्पण किया। पाँच दिवसीय इस अवसर पर निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित हुए।

डायस्पोरा सप्ताह के दौरान सचित्र व्याख्यान

6 जनवरी

1. प्रो० पॉल पोलनसकी द्वारा **जिप्सिस ऐंसेस्ट्रल रिलेशन्स विद इंडिया**
2. श्री श्याम पराण्डे द्वारा **जिप्सिस इन रशिया**
3. मिस एम० गिदजिक द्वारा **जिप्सि वूमैन इन बालकान्स**

7 जनवरी

4. डॉ॰ रूद चन्द्र, ओएचएम, नीदरलैण्ड्स द्वारा हिन्दुस इन सुरीनाम एण्ड नीदरलैण्ड्स।
5. श्री सतबालकर्ण सिंह द्वारा इंडियन डायस्पोरा – कल्चरल पर्सपेक्टिव
6. आस्क मी नो कवैश्चन के पुरस्कार विजेता लेखक प्रो॰ मारियाना बुधोस द्वारा प्रबन्ध-वाचन।
7. डॉ॰ नीरकनवल मनी द्वारा कविता-वाचन।
8. इंडियन डायस्पोरा के विद्वान एवं लेखक डॉ॰ ब्रिज लाल एवं जी॰ ओ॰ पी॰ आई॰ ओ॰ के अध्यक्ष, श्री मोहन गौतम द्वारा चर्चा।

8 जनवरी

6. डायस्पोरा के तत्त्वावधान में सांस्कृतिक मंच डायस्पोरा का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य-वाद-विवाद के लिए एक खुला सत्र।

2. फिल्म शो

5 जनवरी

1. उपनिषद, ओ॰ एच॰ एम॰ उत्पादन, नीदरलैण्ड्स

6 जनवरी

2. एमीर कस्तुरिका, बोस्निया द्वारा **अन्डर ग्राउन्ड**
3. श्री पॉल पोलनसकी द्वारा निर्मित **जिप्सी ब्लड**

7 जनवरी

4. **डायस्पोरा एन इनसाइट- गॉडिलोप में भारतीय संस्कृति** पर एक इ॰गां॰रा॰क॰के॰ उत्पादन।
5. **लैण्ड ऑफ राम** – ओ॰ एच॰ एम॰ प्रस्तुति।
6. **वन्स मोर रिमूव्ड** – सुश्री शुन्डेल प्रसाद द्वारा निर्देशित एवं निर्मित।

8 जनवरी

कैल्फिोर्निया स्टेट युनिवर्सिटी की सुश्री विवियन प्राइस द्वारा प्रस्तुत, भारतीय सीमावर्ती जिलों में कार्यरत प्रवासी मजदूरों पर, एक डाक्यूमेण्टरी फिल्म।

3. प्रदर्शन

7 जनवरी

1. मेरु फाउंडेशन, यू० के० एवं गंधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली के छात्रों ने भरतनाट्यम एवं ओडिसी नृत्य का प्रदर्शन किया। विनिता शास्त्री ने मेरु फाउंडेशन के छात्रों के तथा माधवी मुद्गल ने गर्धव महाविद्यालय के छात्रों के नृत्य की कोरियोग्राफी की।
2. भारतीय-अफ्रीकन मूल के फ्रांसिसी कलाकारों के दल ने भारतीय कलाकारों के साथ तीनों रागों की एक प्रदर्शन किया।
3. उस्ताद अमजद अली खाँ के शिष्य श्री शुजि यामा मोटो ने गायन प्रस्तुत किया।

यह प्रदर्शनी माटी घर में पुनः लगाई गई तथा 30 जनवरी 2007 तक चली।

लोकपरम्परा कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्यशाला (जैण्डर)

18 जुलाई से 3 अगस्त, 2006 तक मधुश्रावणी उत्सव पर कला और कथा कार्यशाला का आयोजन : मिथिला की 36 महिला कलाकारों ने इसमें भाग लिया। इन्होंने मधुबनी के खूबसूरत चित्रों को उकेरा और इ० गा० रा० क० के० के अभिलेखागार में मधुश्रावणी पर्व के वर्णनात्मक चित्रों को चित्रित किया।

कश्मीर हैरिटेज कार्यक्रम का प्रसार

कश्मीर के महान भक्त कवि कृष्ण जू राजदान के 153 वें जन्मदिवस पर उनकी स्मृति में 28 अगस्त, 2006 को इ० गा० रा० क० के० एवं कश्मीर हैरिटेज ने एक परिसंवाद का आयोजन किया। इन संत कवि के पौत्र श्री श्यामलाल राजदान ने परिसंवाद की अध्यक्षता की।

सामूहिक चर्चा एवं पुस्तक-विमोचन (कलामूलशास्त्र कार्यक्रम)

13 मार्च, 2007 को **भारतीय शिलालेख** पर एक सामूहिक चर्चा का आयोजन किया गया। इसमें दस विद्वानों सहित बैंगलोर के विद्यारण्य न्यास के अध्यक्ष डॉ० पी० सबानायगम ने परिचर्चा में भाग लिया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० लोकेश चन्द्र थे।

इस अवसर पर डॉ० कर्णसिंह ने डॉ० पी० सबानायगम की पुस्तक विद्यारण्य (600-650 ई० के मध्य के संस्कृत लेख) का विमोचन किया।

4. स्मारकीय व्याख्यान

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारकीय व्याख्यानों की वार्षिक शृंखला में, 19 अगस्त, 2006 को परम्परा और आधुनिकता पर डॉ॰ निर्मला जैन ने व्याख्यान दिया। डॉ॰ एल॰ एम॰ सिंघवी ने इसकी अध्यक्षता की। यह सि शृंखला का 24 वाँ व्याख्यान था।

5. सार्वजनिक व्याख्यान शृंखला

1. 13 जुलाई, 2006 को एन आई एस टी ए डी एस के वैज्ञानिक डॉ. नव ज्योति सिंह ने मैन, पॉयन्ट एण्ड नम्बर : द डिजिटल स्पिरिट विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो॰ एम॰ जी॰ के॰ मेनन ने इसकी अध्यक्षता की।

2. 27 जुलाई, 2006 को **इंडोनेशियन कान्सेप्ट ऑफ द वॉटर ऑफ लाइफ** विषय पर इंडोनेशिया एवं ओसिनिया विभाग, मानव विज्ञान म्यूज़ियम म्यूनिख़, जर्मनी के विभागाध्यक्ष डॉ॰ मिकेलै अप्पैल ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो॰ लोकेश चन्द्र ने इसकी अध्यक्षता की।

3. 18 अक्टूबर, 2006 को **जैण्डर एण्ड द पोलिटिक्स ऑफ नॉलेज़ विद स्पेशल रेफरेन्स टू इंडिया** पर संयुक्त राज अमेरिका, कैम्ब्रिज, मास, स्मिथ कॉलेज के नृतत्त्वशास्त्री प्रो॰ एफ॰ ए॰ मार्गलिन ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

4. 10 नवम्बर, 2006 को **आर्ट एण्ड एजुकेशन** पर श्री जॉन देवराज ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ॰ मधु खन्ना इसकी अध्यक्ष थी।

5. 17 अप्रैल, 2006 को **धर्म एण्ड चक्र इन बुद्धिस्म एण्ड द वेद** पर केलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के प्रो॰ फ्रित्स स्टॉल ने एक चर्चा प्रस्तुत की। डॉ॰ लोकेश चन्द्र इसके अध्यक्ष थे।

6. 27 अप्रैल, 2006 को **जमाल-ओ-जलाल-ए लव स्टोरी इन ए सफाविद मैन्युस्क्रिप्ट** विषय पर फारसी साहित्य एवं इस्लामिक अध्ययन की विशेषज्ञ डॉ॰ ए॰ हंसबर्गर ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसकी अध्यक्षता डॉ॰ नसीम अख्तर ने की।

7. 28 अप्रैल, 2006 को **क्रिटिकल इश्यूज़ इन इंडियन आर्ट हिस्ट्री** पर बडोदा के ललित कला संकाय के कला इतिहास एवं सौंदर्यशास्त्र के भूतपूर्व प्रोफेसर, प्रो॰ रत्न परीमू ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

8. मई, 2006 को **देवदासिस ऑफ बंगाल** पर रवीन्द्र नाथ टेगौर, विश्वभारती यूनिवर्सिटी की परफॉर्मिंग आर्टस डिपार्टमेंट के विभागाध्यक्ष डॉ॰ महुआ मुखर्जी ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसकी अध्यक्षता डॉ॰ के॰ के॰ चक्रवर्ती की।

9. 12 मार्च, 2007 को कन्टिन्यूटी ऑफ ट्रेडिशनल पोएट्री ऑफ कश्मीर विषय पर प्रसिद्ध कवियत्री श्रीमती बिमला रैना ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

10. 20 मार्च, 2007 को डॉ॰ पी॰ राघवन ने **सिक्रेट्स ऑफ ए सिमेट्री : अवेकनिंग द डेड फ्रॉम ए बाई-गॉन एरा एन्शिएन्ट मेरिटाइम पीपुल ऑफ आदिचनालूर**, तमिलनाडु शीर्षक पर चर्चा की।

11. 28 मार्च, 2007 **महाभारत-उद्भव संरचना और पथ** पर डॉ॰ वासुदेव पोद्दार ने एक हिन्दी में चर्चा की। इसकी अध्यक्षता डॉ॰ एल॰ एम॰ सिंघवी ने की।

12. 30 मार्च, 2007 को चैनजिंग डायनेमिक्स ऑफ इंडियन फैस्टिवल्स इन इंडिया एण्ड तिनिदाद पर प्रवासी विशेषज्ञ श्री सत बालकर्ण सिंह द्वारा परिचर्चा प्रस्तुत की गई।

आदि श्रृव्य कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रस्तुतियाँ

1. पं॰ चन्द्र कुमार मलिक ध्रुपद उत्सव : 9 से 10 नवम्बर, 2006 को प्रसिद्ध ध्रुपद गायक पं॰ चन्द्र कुमार मलिक के स्मृति में ध्रुपदम्, ध्रुपद अकादमी एवं संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से इ॰गा॰रा॰क॰के॰ में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम जनपद-सम्पदा प्रभाग के आदि श्रव्य कार्यक्रम से सम्बन्धित है। 9 नवम्बर, 2006 को पं॰ उदय कुमार मलिक, डॉ॰ अनिल चौधरी एवं उस्ताद रहीम फहिमुद्दीन डागर ने अपने संगीत प्रस्तुतीकरण से श्रद्धांजलि दी। जबकि 10 नवम्बर, 2006 को पं॰ रामजी मिश्रा, उस्ताद शम्सुद्दीन फरीदी एवं पं॰ नवल किशोर मलिक ने गायन प्रस्तुत किया।

2. 5 सितंबर, 2006 को कर्नाटक के यक्ष मंजूषा दल द्वारा रामायण के एक प्रसंग पर पंचवटी शीर्षक से एक यक्षगान प्रस्तुति दी। यह हिन्दी में निबद्ध पहली यक्षगान प्रस्तुति थी और दिल्ली के दर्शकों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

लामा ताशी द्वारा तिब्बती गुरु मंत्र

13 दिसम्बर, 2006 को एच॰ एम॰ वी॰ सा रे गा मा की एक सी॰ डी॰ के विमोचन के अवसर पर अरुणाचल प्रदेश के लामा ताशी एवं अन्य लामाओं ने बौद्ध मंत्रों का गायन किया। यह कार्यक्रम एच॰ एम॰ वी॰ सा रे गा मा के सहयोग से आयोजित किया गया एवं इ॰गा॰रा॰क॰के॰ के अभिलेखागार को सी॰ डी॰ सौंपी गई।

7. फिल्म शो

1. सुरेश कुमार पिल्लै द्वारा निर्मित एवं निर्देशित जहाजी भाई नामक फिल्म 3 मई, 2006 को जनसाधारण को दिखाई गई। कैरीबियन एवं अन्य देशों में भारतीय प्रवासियों की दुर्दशा की चर्चा इसमें की गई थी।

2. 19 अक्टूबर, 2006 को तारा डगलस द्वारा निर्मित ऐनिमिशन फिल्म **स्टोरी टैलिंग कॉम्पिटिशन** दिखाई गई।

श्रद्धांजलि : 7 जनवरी 2007 कोआई आई सी में इ॰गा॰रा॰क॰के॰ के भूतपूर्व सदस्य-सचिव श्री मुनीश चन्द्र जोशी को एक शोक सभा में भावभीनी श्रंद्धाजलि अर्पित की गई।

सूत्रधार

कार्मिक

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची अनुबन्ध में दी गई है।

सेवा एवं आपूर्ति विभाग

यह प्रभाग समूचे कार्यालय के साजोसमान एवं फर्नीचर की मरम्मत एवं रख-रखाव का उत्तरदायी है। इसमें आतिथ्य, लेखा-सामग्री वितरण, परिवहन , सीजीएचएस एवं कार्यालय के अन्य रख-रखाव के कार्यों के लिए विभिन्न अुनभाग हैं।

भवन परियोजना कमेटी

सरकार ने वर्ष 1985 में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के स्थायी भवन संकुल निर्माण के लिए 100 करोड़ के पूंजी परिव्यय का अनुमोदन प्रदान किया और साथ ही नई दिल्ली के सेण्ट्रल विस्ता क्षेत्र में स्थित 24, 706 एकड़ भूमि इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को आंबटित की ।

संकुल की संरचना निम्न आठ भवनों के सुघटित एकबद्ध समूह पर आधारित है:- 1. कलानिधि, कलाकोश एवं सम्मिलित संसाधन क 2.सूत्रधार, भूमिगत पार्किंग खण्ड बी 3. जनपद सम्पदा 4. प्रदर्शनी दीर्घाएँ 5. अभिलेखागार एवं आवासीय खण्ड, जिसमें तीन रंगशाला भवन है 6. कान्सर्ट हाल (2000 व्यक्तियों के लिए) 7. भारतीय रंगशाला (400 व्यक्तियों के लिए)8. राष्ट्रीय रंगशाला (1200 व्यक्तियों के लिए)एक ओपन थियेटर की योजना भी बनाई गई है।

भवनों का निर्माण आरम्भ करने के लिए सचिवों को समिति ने 5.06.1987 को कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में आयोजित सभा में यह तय किया कि भवन निर्माण कार्य का दायित्व आई०जी०एन०सी०ए० न्यास को सौंप दिया जाए। फिर न्यास ने प्रधानमंत्री के अनुमोदन के पश्चात् एक अधिकार-प्राप्त भवन समिति का गठन किया जिसका नाम बाद में बदल कर भवन परियोजना समिति कर दिया गया जो भवन निर्माण से सम्बन्धित सभी तथ्यों को देखेगी।

प्रधानमंत्री ने भवन परियोजना समिति के गठन का अनुमोदन 6 जुलाई 1987 को दिया, और उसके पश्चात आई०जी०एन०सी०ए० न्यास ने 10.12.1987 को आयोजित अपनी प्रथम सभा में भवन परियोजना समिति के गठन को अनुमोदित किया। इसी सभा में भवन परियोजना समिति के विचारार्थ विषय भी तैयार किए गए। इस नवीन भवन परियोजना समिति की सदस्यता में निम्नलिखित सदस्य सम्मिलित थे:

इ०गा०रा०क०के० न्यास के तीन सदस्य ; भारत सरकार के तीन सचिव - सचिव, शहरी विकास, सचिव, व्यय तथा सचिव संस्कृति ; दो वास्तुकला अभियन्ता तथा अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव (भ०प०स०)। भवन परियोजना समिति के प्रथम अध्यक्ष, सदस्य योजना आयोग श्री आबिद हुसैन थे, और उनके अमेरिका के राजदूत नियुक्त होने के पश्चात् श्री प्रकाश नारायण ने, जो भूतपूर्व अध्यक्ष रेलवे बोर्ड एवं भारत सरकार के प्रमुख सचिव तथा वर्क्स एवं हाउसिंग मंत्रालय के सचिव भी रहे, भवन परियोजना समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

इ०गा०रा०क०के० न्यास ने जहाँ एक ओर भवन परियोजना समिति को प्रशासनिक एवं वित्तीय अधिकार दिए, वहीं उसे समुचित कर्मचारियों एवं सुविधाओं के साथ एक सचिवालय बनाने का अधिकार भी दिया ताकि परियोजना के कार्य में कोई बाधा न आए।

भारत सरकार द्वारा संस्वीकृत निधि को व्यक्तिगत जमा खाते में विशेषरूप से निर्माण कार्य हेतु रखा गया।

इ०गा०रा०क०के० भवन परियोजना के पहले भवन, जिसमें कलानिधि, कलाकोश, सम्मिलित संसाधन सम्मिलित थे, का उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री द्वारा 19 नवम्बर 2001 को सम्पन्न हुआ।

निधि के अभाव में, इ०गा०रा०क०के० न्यास के कार्यकारिणी समिति ने 18 अप्रैल, 2002 को आयोजित अपनी 26वीं सभा में यह निश्चय किया कि इ०गां०रा०क०के० न्यास के तथा संस्कृति एवं शहरी विकास मंत्रालय के अनुमोदन के बाद भवन परियोजना समिति को समाप्त कर दिया जाए। कार्यकारिणी समिति का यह भी विचार था कि भवन परियोजना समिति के समाप्त होने के पश्चात् इसके सभी अधिकार कार्यकारिणी समिति को हस्तान्तरित हो जाएंगे। कार्यकारिणी समिति ने इ०गा०रा०क०के० के सदस्य सचिव को यह अधिकार भी दिया कि आवश्यकतानुसार निर्णय लेकर, कोर्ट के बाहर, बिलों का भुगतान करे।

यह भी निर्णय लिया गया कि एक उप-समिति का गठन किया जाए जो सभी कार्यों का देख रेख करती रहेगी तथा इ०गा०रा०क०के० भवन परियोजना से सम्बन्धित विषयों में कार्यपालक समिति न्यास को सलाह देती रहेगी। इस उप-समिति के सदस्य होंगे - सदस्य-सचिव इ०गां०रा०क०के०, शहरी विकास मंत्रालय द्वारा दो नामांकित सदस्य (दिल्ली शहरी कला आयोग से एक तथा के०लो०नि०वि० से एक), तथा संस्कृति विभाग के वित्तीय सलाहकार।

15 अक्तूबर, 2003 से परियोजना के निर्माण कार्यों की देख रेख कर रहे कॉन्स्ट्रक्शन मैनेजमेंट एजेंसी (सी.एम.ए.) टाटा प्रोजेक्ट लिमिटेड को सेवा विमुक्त कर दिया गया।

निधि की कमी को देखते हुए, कार्यकारिणी समिति द्वारा नियुक्त उप-समिति ने यह निर्णय लिया कि जैसा है जहाँ है के आधार पर सभी कार्यों को रोक दिया जाए, तथा केवल अत्यावश्यक संविदाओं को पूर्ण किया जाए।

कलानिधि, कलाकोश एवं सम्मिलित संसाधन भवन का कुछ भाग इ०गा०रा०क०के० के कुछ प्रभागों द्वारा अधिकार में ले लिया गया है। जबकि सूत्रधार एवं भूमिगत पार्किंग ख का कार्य (नवम्बर 2001)नींव स्तर पर धन आबंटन की कमी से निलंबित कर दिया गया।

दोनों भवनों के निर्माण कार्य का पूर्ण करने के विषय को भारत सरकार के साथ उच्चतम स्तर पर लिया गया, तथा निरंतर प्रयासों के बाद जून, 2006 को प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव के साथ बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिये गए:

1. क्योंकि इ०गां०रा०क०के० दोनों भवनों के निर्माण पर 100 करोड़ रुपये का अब तक व्यय हो चुके हैं इस कार्य को प्राथिमकता पर लिया जाए तथा निर्माण कार्य पूर्ण किया जाए जिससे निवेश पर होने वाले लाभ को तुरंत प्राप्त किया जा सके। इसलिए सी० पी० डब्ल्यु० डी० को निर्देश दिया गया कि इ०गा०रा०क०के० के परामर्श से, भवन निर्माण पूर्ण होने में वाले व्यय का अनुमान लगाए तथा परिशोधित बजट प्राक्कलन तैयार करके एक माह के अन्दर इ० एफ० सी० का अनुमोदन प्राप्त करे।
2. भवनों के निर्माण कार्य पूर्ण करने के लिए सी०पी० डब्ल्यु डी० द्वारा प्रस्तावित निधि का प्रावधान संस्कृति विभाग के बजट मे अनुपूरक अनुदान के रूप में किया जाएगा जहाँ से सी० पी० डब्ल्यू० डी० को दिया जाएगा।
3. सी० पी० डब्ल्यु० डी०, इ०गा०रा०क०के० के वर्तमान एवं नए भवनों के अनुरक्षण के लिए प्राक्कलन तैयार करेगा। आवश्यक निधि का प्रावधान संस्कृति विभाग के बजट में अनुपूरक अनुदान के रूप में किया जाएगा तथा आवश्यकता पड़ने पर इ०गां०रा०क०के० के भवनों के अनरक्षण हेतु सी० पी० डब्ल्यू० डी० को दिया जाएगा।

परिशोधित बजट प्राक्कलन, 21.06.06 को प्रधानमंत्री कार्यालय में आयोजित बैठक मे लिए गए निर्णय पर आधारित है। जिसके अनुसार भवन न० 1 (कलानिधि, कला कोश, सम्मिलित संसाधन भवन क) पूर्ण रूप से निर्मित किया जाएगा तथा भवन न० 2 (सूत्रधार, भूमिगत पार्किंग ख) का निर्माण भूमि के स्तर तक किया जाएगा।

संस्कृति मंत्रालय ने कंसर्ट हाल (संकुल का अंश) का प्राक्कलन मांगा है जिसके लिए उपलब्ध नक्शे एवं प्रारम्भिक प्राक्कलन सी० पी० डब्ल्यू० ड़ी० को विस्तृत प्राक्कलन तैयार करने के लिए दे दिए गया हैं।

सी० पी० डब्ल्यु० डी० ने सितम्बर-नवम्बर, 2006 को, उपर्युक्त निर्णय के अनुसार बचे हुए कार्यों को पूर्ण करने के लिए, निम्नलिखित सकंलन दिए हैं :

(क) अनावर्ती व्यय	**राशि (रु.)**	
भवन -1 के शेष कार्य		
(कलानिधि, कलाकोश, सम्मिलित संसाधन क)		
- सिविल एवं इलेक्ट्रिकल	3.66 करोड़	
- बी० एम० एस० वर्क	0.48 करोड़	7.17 करोड़
- सेन्ट्रलाइज़्ड यू० पी० एस० एवं सर्वेलेंस सिस्टम	3.03 करोड़	
भवन -2		
(सूत्रधार, भूमिगत पार्किंग ख)	19.42 करोड़	
कम्पाउंड वाल	1.66 करोड़	
बकाया व्यय	4.63 करोड़	
योग क :	**32.88 करोड़**	
(ख) आवर्ती व्यय		
अनुरक्षण कार्य	33.58 करोड़	
योग ख :	**33.58 करोड़**	
कुल योग(क + ख)	**66.46 करोड़**	

(3 % आकस्मिकता व्यय सम्मिलित हैं)

उपर्युक्त प्राक्कलन में 4.63 करोड़ का अतिरिक्त व्यय, जो संविदा एवं प्रशासनिक व्यय के रूप में इ०गां०रा०क०के० द्वारा दिया जाना है, सम्मिलित है क्योंकि सी०पी०डबल्यु०डी० आई०जी०एन०सी०ए० परियोजना सभी विलंगमों से मुक्त लेगा।

निधि अनुमोदन के लिए इ०एफ०सी० प्रारूप दृष्टव्य 16-6-2006 को सांस्कृतिक मंत्रालय को उसकी इच्छा अनुसार अग्रेषित कर दिया गया।

मंत्रालय को प्रेषित किया गया परिशोधित संकलन मंत्रालय में प्रेक्षणाधीन है। उपर्युक्त संकलित व्यय में निम्नलिखित दो दावे सम्मिलित नहीं है क्योंकि ये मध्यस्थ के अधीन हैं:

(क) सूत्रधार एवं भूमिगत पार्किंग ख - नागारिक कार्य, अहलुवालिया कांट्रेकल्स (इ०) लिमिटेड के साथ माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्देश पर उपयुर्क्त विषय को तीन सदस्यीय,

माध्यस्थ अधिकरण को दे दिया गया हैं जिसमें प्रमुख (अवकाश प्राप्त) न्यायधीश श्री एम० एल० वर्मा है।

इस विषय में तीन सुनवाइयाँ हो चुकी है। अहलुवालिया कान्ट्रेक्टर्स इंडिया लिमिटेड ने 25.91 करोड़ रुपए का दावा किया है जिसके उत्तर में इ०गा०रा०क०केन्द्र ने जवाबी दावा 19.50 करोड़ का समय सीमा के अन्दर प्रस्तुत किया है।

(ख) तीर्थ राम आहुजा के साथ सिविल वर्क्स

इस विषय में ठेकेदार का दावा 4,32,101.00 रु० है जो कि, कंस्ट्रक्शन मैनेजमेंट एन्जेसी-टाटा प्रोजक्ट लिमिटेड के रिपोर्ट के आधार पर, ठेकेदार द्वारा की गई क्षति एवं चोरियों के बदले में उसके प्रतिभूति जमा राशि में से रोक दिया गया है। 29 जून, 2005 को कार्यकारिणी समिति ने अपनी 31 वी बैठक में यह निर्णय लिया कि ठेकेदार में दावे विरुद्ध कानूनी कारवाई की जाए । ठेकेदार ने 20,28,823.00 रु० देने के लिए कानूनी सूचना भेजी है। विषय का पुन: परीक्षण किया गया है एवं विषय की वास्तविकता लम्बी एवं खर्चीली कानूनी प्रक्रिया को उचित सिद्ध नहीं करती ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र - दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र बैंगलौर

भारत के दक्षिण प्रान्तों के क्षेत्र अध्ययनों में अनुसन्धान एवं विद्वता को बढ़ाने हेतु इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र की स्थापना वर्ष 2001 में की गई।

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र ने मंदिरों के त्यौहार, धार्मिक संस्कारों, वास्तुकला, रंगमंच, लोक एवं जनजाति कलाओं से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों किए ।

दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र *वैनिशिंग फ़ोक ट्रेडिशन्स* के प्रलेखन के लिए एक दीर्घावधिक परियोजना चला रहा है। कन्नड़ एण्ड कल्चर निदेशालय का सहयोगात्मक कार्यक्रम है। अब तक 24 समूहों की लोक कथाएँ पूरी हो चुकी है तथा डी०वी०डी० के रूप में इन्हें अभिलेखागार में सुरक्षित कर दिया गया है।

सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रलेखन के क्षेत्र में, श्रावण बेलगोला में महामस्तकाभिषेक का कार्य सम्पन्न हो चुका है तथा सम्पादित डी०वी०डी. तैयार कर दी गई है। सम्पादित असोरायमसोमयाग का लेख तैयार हो चुका है।

12 से 16 सितम्बर, 2006 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के सहयोग से दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र ने शैल चित्रकलाओं की एक प्रदर्शनी आयोजित की। इस अवधि में एक संगोष्ठी

तथा कार्यशाला का भी आयोजन किया । प्रस्तुत लेखों के प्रकाशन हेतु इसे सम्पादित किया जा रहा है ।

अपना पुस्तकालय तैयार करने हेतु दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र ने 591 पुस्तकें क्रय की ।

प्रकाशन

निम्नलिखित प्रकाशन मुद्रण के विभिन्न स्तरों पर है :-

1. प्रथम शताब्दी के कन्नड़ शिलालेख
2. मेलकोटे की मंदिर परम्पराएँ एवं त्यौहार
3. रस के सिद्धान्त - ध्वनि-औचित्य-वक्रोक्ति का प्रमुख कला स्वरूपों पर अनुप्रयोग।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दक्षिण भारतीय क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलोर के भवन संकुल के निर्माण कार्य की प्रगति रिपोर्ट

1. दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र इ०गा०रा०क०केन्द्र बैंगलोर स्थित भवन का निर्माण कार्य 1.01.2003 को नेशनल बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन लिमिटेड (एन०बी०सी०सी०) को दिया गया और 12.05.2006 को उनके साथ अनुपूरक समझौता किया गया है। एन० बी०सी०सी०ने निर्माण का शेष कार्य श्री साई मित्र एस्टेट्स हैदराबाद को, उन दोनों के मध्य संविदा समझौते के अनुसार 2,16,16,628/- रुपये में दे दिया । यह कार्य 21 मई, 2007 तक सम्पन्न होना था। परन्तु ठेकेदार, वास्तु अभियन्ता से देरी से नक्शा मिलने के कारण निर्माण कार्य नवम्बर, 2006 में आरम्भ कर सका ।

2. 100/-रु० जमा 10,00,000/-रु०की दूसरी किस्त, पहले किए गए कार्य का मूल्य, जिसका मूल्यांकन तथा सत्यापन अभी हुआ है, 24.5.2006 को एन०बी०सी०सी०को दे दी गई। एन०बी०बी०सी० के पत्र संख्या एन०बी०सी०सी० /आई०जी०एन०सी०ए०, बी०एल०आर०/ 2006/2070 दिनाङ्क 28.09.2006 के अनुसार निर्माण कार्य प्रगति पर है।

3. कार्य की प्रगति के अनुवीक्षण हेतु एक समिति का गठन कर दिया गया है, जो इस प्रकार है:-
   (1) प्रो० एस० सत्तार, मानद निदेशक, एस० आर० सी, आई० जी० एन० सी०ए०
   (2) श्री जयवीर श्रीवास्तव, मण्डल प्रमुख (दक्षिणी मण्डल), एन०बी०सी०सी०
   (3) श्री वी०आर०सर्वते , इंजिनियरिंग परामर्शदाता, इ०गा०रा०क०केन्द्र
   (4) श्री एम०एन० कृष्णामूर्त्ति, उप परियोजना प्रबन्धक, एन०बी०सी०सी०
   (5) श्री संजय कुमार ओझा, निदेशक (प्रशासन), इ०गा०रा०क०केन्द्र

4. एस०आर०सी० भवन के तीनों खण्डों के निर्माण कार्य की भौतिक स्थिति इस प्रकार है:

1. **संग्रहालय खण्ड**

रिटेनिंग वाल एवं प्लिन्थ बीम का कार्य पूर्ण हो चुका है। आवश्यक स्तर तक स्तंभ खड़े करना का कार्य तथा इटों का कार्य पूर्ण हो चुका है। छत के स्तर पर आर०सी०सी० बीम के लिए सुदृढ़ता एवं शटरिंग का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है तथा कांकरीट का कार्य अभी शेष है। ढलावदार छत के लिए सरंचनात्मक स्टील तथा सीमेंट से बने लफार्ज टाइलों को प्राप्त करने का कार्य प्रगति पर है।

2. **मुख्य खण्ड**

स्तर 1 एवं 2 का ईंटों का कार्य पूर्ण हो चुका है। स्तर 3 पर ईटों का कार्य 60 पूर्ण हो चुका है। स्तर 1 एवं 2 के अन्दर के पलस्तर का कार्य 90 पूर्ण हो चुका है। स्तर 3 पर स्तभों को खड़ा करने का कार्य प्रगति पर है। बाहरी भीग के ड्रेस्ड स्टोन मैसनरी का कार्य प्रगति पर है तथा 30 कार्य अभी शेष है। स्तर 1 एवं 2 में फर्श बनाने का काम तथा आन्तिरक नलकों की फिटिंग का कार्य प्रगति पर है। सीढियाँ तथा खुले में रेलिंग लगवाने के लिए आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने का कार्य चल रहा है। मुख्य द्वार के क्षेत्र में तिजोरी पट्टी के लिए सुदृढ़ता एवं शटरिंग का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है और कांक्रीट का कार्य अभी शेष है। आई०एस० एम०बी० 300 एवं 450 का कार्य प्रगति पर है। नाट्यशाला की छत पर पट्टी का अन्तिम कार्य प्रगति पर है।

नोट : स्तर 2 पर पुस्तकालय खण्ड के 5 कमरे हर तरह से तैयार हो चुके हैं।

3. **शयनशाला खण्ड**

भूमि सतह के स्लैब लगाने का आर०सी०सी० कार्य पूर्ण हो गया। ईंट और अन्य सबंधित कार्य प्रगति पर है।

4. **बाहरी कार्य**

सड़क बनाने के लिए नक्शा बनाने का कार्य शीघ्र ही किया जाएगा। सफाई कार्य आरम्भ कर दिया गया ताकि सेप्टिक/सम्प टैंक बनाया जा सके क्योंकि इस कार्य का कुछ अंश बहुत पहले ही पूरा कर दिया था।

(5) **व्यय**

इस कार्य पर कुल व्यय 68,26,951 रु०हुए।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

न्यासी मण्डल (31.3.2007)

1. **श्रीमती अम्बिका सोनी**
   पर्यटन एवं माननीया पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री,
   संस्कृति मंत्रालय
   शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001

2. **डॉ०(श्रीमती) कपिला वात्स्यायन**
   अध्यक्ष इ०गा०रा०क०केन्द्र, न्यास
   85, एस०एफ०एस०,डी०डी०ए० फ्लैट्स
   गुलमोहर एन्क्लेव,
   नई दिल्ली-110 049

3. **श्री जयपाल रेड्डी**
   माननीय शहरी विकास मंत्री
   शहरी विकास मंत्रालय
   निर्माण भवन, नई दिल्ली-110 011

4. **डॉ० कर्ण सिंह**
   3, न्याय मार्ग
   चाणक्यपुरी
   नई दिल्ली-110 021.

5. **श्री रामनिवास मिर्धा**
   डी-39, प्रथम तल
   आनन्द निकेतन
   नई दिल्ली-110 021

6. **श्री रतन एन० टाटा**
अध्यक्ष, टाटा सन्स लिमिटेड
बोम्बे हाउस, 24 होमी मोडी स्ट्रीट
मुम्बई - 400001

7. **श्री मृणाल सेन**
मकान नं० 4 एन०
38, पद्म पुकुर रोड़
शिवांगी अपार्टमैंट
कोलकाता-700 020(प०ब०)

8. **श्री अदूर गोपालकृष्णन**
दर्शनम्
तिरुवनन्तपुरम्
केरल - 695 017

9. **श्री सलमान हैदर**
ए-3, प्रथम तल
पूर्वी निजामुद्दीन
नई दिल्ली-110 013

10. **उस्ताद अमजद अली खान**
3, साधना एन्क्लेव
पंचशील पार्क
नई दिल्ली- 110 017

11. **डॉ० रोदम नरसिम्हा**
अध्यक्ष, इंजिनियरिंग मैकेनिक्ल युनिट
जवाहरलाल नेहरु अद्यतन वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र
जाकुर पी०ओ०, बैंगलोर 560 064

12. **प्रो० ए० रामचन्द्रन**
22, भारती कालोनी
विकास मार्ग,
नई दिल्ली 110 092

13. **डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती,** (आई० ए०एस०)
सदस्य-सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र
सी०वी०मेस भवन,
जनपथ, नई दिल्ली 110 001

अनुबन्ध-2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

कार्यकारी समिति के सदस्यों की सूची(31.3.2007)

1. **डॉ०(श्रीमती) कपिला वात्स्यायन**
   अध्यक्ष इ०गा०रा०क०केन्द्र, न्यास
   85, एस०एफ०एस०, डी०डी०ए० फ्लैट्स
   गुलमोहर एन्क्लेव,
   नई दिल्ली-110 049

2. **डॉ० कर्ण सिंह**
   3, न्याय मार्ग
   चाणक्यपुरी
   नई दिल्ली-110 021.

3. **श्री रामनिवास मिर्धा**
   डी-39, प्रथम तल
   आनन्द निकेतन
   नई दिल्ली-110 021

4. **डॉ० रोदम नरसिम्हा**
   अध्यक्ष, इंजिनियरिंग मैकेनिक्ल युनिट
   जवाहरलाल नेहरु अद्यतन वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र
   जाकुर पी०ओ०, बैंगलोर 560 064

5. **प्रो०ए० रामचन्द्रन**
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग,
   नई दिल्ली 110 092

6. **डॉ०कल्याण कुमार चक्रवर्ती**, (आई० ए०एस०)
सदस्य-सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र
सी०वी०मेस भवन,
जनपथ, नई दिल्ली 110 001

अनुबन्ध-3

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची
(31.3.2007 तक)

डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती, (आई ए एस)	सदस्य सचिव
श्री जॉय कुरियाकोस	अवर सचिव

कलानिधि

1.	डॉ० आर०सी० गौड़	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	डॉ० गौतम चटर्जी	रिसर्च एसोशिएट एवं लेखक
3.	श्री वीरेन्द्र बंगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड्स)
4.	श्री प्रमोद किशन	रिप्रोग्राफी अधिकारी
5.	श्री दिलीप कुमार राणा	अनुसंधान अधिकारी
6.	डॉ० कीर्त्तिकान्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी

कलाकोश

1.	प्रो० जी०सी०त्रिपाठी	प्रो० एवं विभागाध्यक्ष, कलाकोश
2.	डॉ० मधु खन्ना	एसोशिएट प्रोफेसर
3.	डॉ० एन०डी०शर्मा	एसोशिएट प्रोफेसर
4.	डॉ० अद्वैतवादिनी कौल	सम्पादक
5.	डॉ० राधा बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
6.	डॉ० वी०एस० शुक्ल	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
7.	डॉ० बच्चन कुमार	अनुसंधान अधिकारी

वाराणसी कार्यालय

1.	डॉ० सुकुमार चट्टोपाध्याय	वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी
2.	डॉ० एन०सी०पाण्डा	वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी
3.	डॉ० उर्मिल शर्मा	सलाहकार (शैक्षणिक)

जनपद-सम्पदा

1.	डॉ० मौली कौशल	एसोशिएट प्रोफेसर
2.	डॉ० बंसीलाल मल्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
3.	डॉ० रमाकर पन्त	अनुसंधान अधिकारी

कलादर्शन

1.	श्रीमती सबीहा ज़ैदी	कार्यक्रम निदेशक
2.	श्री सुरेश पिल्लै	सलाहकार (डायस्पोरा)

सूत्रधार

1.	श्री अजय नारायण झा (आई०ए०एस०)	संयुक्त निदेशक (प्रशासन)
2.	संजय कुमार ओझा (आईएफएस)	निदेशक (प्रशासन)
3.	श्री पी०झा	निदेशक (एम०एम०)
4.	श्री टी० एलोशियस	अवर सचिव
5.	श्री रवि कान्त गुप्त	अवर सचिव
6.	श्री बी०एस० बिष्ट	लेखाधिकारी
7.	श्रीमती मंगलम् स्वामिनाथन	उप-निदेशक (आई एण्ड पी आर)
8.	डॉ० जी०एल०बादाम	वरिष्ठ सलाहकार
9.	श्री आर०पी०गुप्त	सलाहकार
10.	श्री आर०सी०सहोत्रा	सलाहकार

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र , बैंगलोर

1.	प्रो० एस०सेतार	अवैतनिक निदेशक

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला वरिष्ठ कनिष्ठ अनुसंधान सहायक

कलाकोश

1.	डॉ० सुजाता रेड्डी	कनिष्ठ अनुसंधान सहायक

वाराणसी कार्यालय

1.	डॉ० पार्वती बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता
2.	डॉ० रमा दुबे	कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता

क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलोर

1.	डॉ० प्रमिला लोचन	अनुसंधान अध्येता
2.	डॉ० करुणा विजेन्द्र	अनुसंधान अध्येता

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना जी०ओ०एम०एल०, चैन्नई)

1.	डॉ० एस० सौन्द्राहंडिन	परियोजना समन्वायक
2.	श्री जे० मोहन	वरिष्ठ अध्येता
3.	श्री पी०पी०श्रीधर उपाध्याय	वरिष्ठ अध्येता
4.	श्रीमती वी पर्वतम्	कनिष्ठ अध्येता

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना आर०ओ०आर०आई०,अलवर)

1.	डॉ० सर्वेश कुमार शर्मा	परियोजना समन्वायक
2.	डॉ० (श्रीमती) रमा शर्मा	वरिष्ठ अध्येता

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची

पुस्तकें

1. इलस्ट्रेटेड डिक्शनरी ऑफ वेदिक रिचुअल्स- डॉ० एच०जी० रानाडे
2. ए पैशन फॉर फ्रीडम : द स्टोरी ऑफ किसनिन जग्गी देवी- दीप्ति प्रिया मेहरोत्रा

डी वी डी फिल्म्स

- ऐहोले : क्रेडल ऑफ इण्डियन आर्किटेक्चर
- द टाकिंग रॉक्स ऑफ बादामी
- बिहाइंड द मास्क
- श्रवणबेलगोला - द जैन हैरिटेज साइट
- एकोज़ ऑफ द पास्ट बीजापुर
- सेलेश्येल कोरोनेशन- महामस्तकाभिषेकम् ऑफ बाहुबली - कर्कल
- द लेगेसी ऑफ राज दीन दयाल
- गोतिपुआ
- हम्पी - द वर्ल्ड हैरिटेज फेस्टिवल
- सेक्रेड डांसिस एट द हेमिस फेस्टिवल
- टेम्पल इन्स्ट्रमेण्ट्स ऑफ केरल
- लाई-हराओबा
- महाकुम्भ - इन सर्च ऑफ द नेक्टर
- दक्षिण कन्नड़-द लैण्ड ऑफ द मदर गौडेस
- म्यूरल्स ऑफ केरल
- नवकलेवर - द न्यू एम्बॉडिमेण्ट
- मिरासन्स ऑफ पंजाब-बॉर्न टु सिंग
- रामलीला - द ट्रेडिशनल परफॉर्मेंस ऑफ रामायण
- सात सुर

- द लिगेसी ऑफ ताना भगत
- बृहदीश्वर, तंजावुर – महाकुम्भाभिषेक
- थांग-ता-मार्शल आर्ट ऑफ मणिपुर
- उरुमि – फाइटिंग फॉर सर्वावल
- ओरल ट्रेडिशन ऑफ वेदाज़
- वांगला-ए गारो फेस्टिवल